अपनी बात

अध्ययन, मनन, चिंतन के निष्कर्षों ने
जब पा लिया मेरी चेतना में स्थान
तो मन की चंचलता में शब्दों की लहरों ने
तरंगित होकर छोड़ दी मधुर तान
भावों के निष्कप होने की प्रक्रिया में
मुखरित हो उठा अस्तित्व का प्रवाह
और स्वभाव में स्थित होने लगा
कि चेतना के तल पर मिल गया आनंद अथाह

यह सब कुछ हुआ अनजान
पर मैंने इसे अब अपना लिया मान

बसन्त पंचमी
१६-२-७५

सोहनराज कोठारी

अपनी अनुभूतियां : शब्दों के घेरे में

राजस्थान उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री भगवतीप्रसाद बेरी का मुझ पर गहन सात्विक स्नेह और कोटा संभाग के प्रति उनका आकर्षण रहा है. और इन दोनों स्थितियों में उन्होने मेरी जन्मभूमि से दूरस्थ स्थान होने के कारण मेरी इच्छा न होते हुए भी मेरा स्थानान्तरण कोटा कर दिया। संयोग की बात थी कि कोटा में आने के एक वर्ष के भीतर भीतर मेरे युवा भतीज का लंबी बीमारी के बाद देहांत हो गया व उसके अवसाद से मेरे अग्रज व पथ प्रदर्शक बड़े भाई साहब का भी निधन हो गया। इन दोनो घटनाओं का मुझ पर आघात होना स्वाभाविक था, पर इसके उपरांत भी मैंने अपनी आंतरिक स्थिति को विचलित नहीं होने दिया। कोटा में मेरा निवास स्थान एक बहुत ही भव्य व रमणीक सरकारी बंगले में है। जिसमें चारों ओर नानाविध वृक्ष एवं लतिकाओं से परिपूर्ण नैसर्गिक सौन्दर्य अपने अपूर्व साज सज्जा व श्रृंगार से उभरता हुआ प्रतीत होता है। इस संभाग के विभिन्न न्यायलयों के निरीक्षण के समय कोटा, बूंदी, झालावाड़ तीनों जिलों का मैंने पर्याप्त भ्रमण किया और मुझे इस संभाग की प्राकृतिक संपदा, अनुपम सांस्कृतिक धरोहर और सम्मोहक प्रेरणाओं ने बहुत प्रभावित किया। इस सारे ताजगी भरे सुरम्य, सुगन्धित एवं आन्नदपूर्ण वातावरण के मध्य मेरी पारवारिक शोकाकुल स्थिति ने मुझे जीवन की व्याख्या खोजने को विवश किया और उसका सहज परिणाम यह हुआ कि मैंने अपने वर्षों के अध्ययन, मनन, चिंतन के निष्कर्षों को क्षणिकाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया और उसी के कारण अल्प से समय में लगभग चार सौ क्षणिकाओं की रचना हो गई।

जीवन को सुन्दर बनाने के लिए मैं प्रारम्भ से साहित्य व कला में अभिरुचि रखता था व उसे शब्दों के योग के माध्यम से कभी कभी प्रकट करने का भी प्रयास करता था। इस वर्ष भगवान महावीर २५०० वें निर्वाण महोत्सव का पावन अवसर होने के कारण मैंने उस महामनीस्वी को भी अपनी अनुभूतियों में देखने का प्रयास किया

और उसे शब्दों में बाँधना चाहा। यदा कदा साहित्यिक समागम के समय यहाँ के प्रख्यात कवि और संवेदनशील गीतकार कुमार शिव, शब्द चयन के अतुल धनी भाई श्री प्रेमजी प्रेम व कला मर्मज्ञ श्री राम कुमार जी (जन सम्पर्क अधिकारी) आदि कई साहित्यिक मित्रों ने मेरी रचनाओं को सराहा व इनको प्रकाशित कराने के लिए अनुमति चाही। एक न्यायिक अधिकारी व साधारण साहित्य सेवी के लिए यह सहज संकोच की बात थी, पर मित्रों का आग्रह मैं टाल नहीं सका और उसी के कारण चामल प्रकाशन द्वारा शब्दों की लहरें व शिल्पा प्रकाशन द्वारा महावीर मेरी अनुभूतियों में, व अस्तित्व का प्रवाह का प्रकाशन हो पाया। स्थानीय जिलाधीश अनिलकुमार जी एवं अनन्य मित्रों व अधिकारीगणों ने मेरे प्रकाशनों को सराहा व मुझे उत्साहित किया।

मैं अपने सभी मित्रों व हितैषियों का आभारी हूँ, जिन्होने मुझे अपने लघु शब्द चयनों को प्रकाशन कराने के लिये प्रेरणा प्रदान की व मेरे यश और आनन्द की कामना की। वस्तुतः यह कोटा संभाग की विशेषता ही है कि मैंने सारे विषादों के उपरांत भी यहां अत्यधिक आह्लाद व आनन्द पाया।

वस्तुतः मैं अपनी सारी अनुभूतियों को शब्दों की लहरों में तैराता हुआ अस्तित्व के प्रवाह में एकाकार करना चाहता हूँ और मेरी कामना है कि चेतना के तल पर ये लहरें किसी दिन तिरोहित हो जाए और यह प्रवाह भी अनंत में विस्तीर्ण बन जाय ताकि मेरे जीवन को पूर्णता एवं समग्रता की उपलब्धि हो सके।

—सोहनराज कोठारी

卐 शब्दों की लहरों, से जब मैं हो गया पार
मिल गया, निशब्द, शांत, शून्य का संसार
पा लिया, मैंने तभी अस्तित्व का प्रवाह
छा गया उल्लास, भर गया उत्साह ★

卐 अपने विचारों को शब्दों में बांधकर
कर दिया आकार युक्त
पर काल के बंधन से, शब्द रह सके कब मुक्त
काल के आवरण को पार सकते हैं,
वे ही शाश्वतस्वर
जिनमें चेतना की अनुभूति, गूंजती प्रखर ★

卐 जिस किसी को हमने दे दिया नाम
वह वस्तु बन गया, हो गया उसका सीमित काम
शब्द हैं ठोस, जिसके कुछ न आर पार
सारी संभावनाएं सिमट कर हो जाती बेकार
पर अस्तित्व तो है तरल, जिसका सतत प्रवाह
अनेक अवस्थाएं, समाहित होकर भी पाती न थाह
जीवन या अस्तित्व को शब्द देकर कहा
कि रुक गई गति
अनुभूति न बन कर, केवल हो गई स्थिति ☆

卐 अस्तित्व के प्रवाह में, प्रेम बढ़ता रहे
उसमें, नित्य नया वेग चढ़ता रहे
तभी आयेगा, उसमें आनन्द नूतन
पर यदि प्रेम स्थिर होकर बन गया स्वभाव
तो वही बन जायगा दुखद बन्धन ☆

卐 आनन्द से भरा हो जीवन
या वेदना से भरा हो मन
या आश्चर्य से डूबा हो धरती का कण कण
इन सब को शब्दों में समाहित किया
कि हो गया साहित्य सृजन ★

卐 हृदय में लिखने की प्रेरणा के भाव
जागृत होकर करते वहाव
जब शब्दों के संगीत का हो ज्ञान
कला हीन होने की कला लें जान
और जन जन को भावनाओं को दे सकें सम्मान ★

卐 कविता एक दर्शनहै, जो हृदय को लेती मोह
और दर्शन वह कविता है, जो गाता रहता मन
दोनों का हो जाय मधुर मिलन
तो एक ही समय में हृदय में भर जाये अनुराग
और मन छेड़ दे कोई प्रियकारी राग
और प्रियतम की छाया में
हमारे जीवन का कण-कण मुखरित हो उठे जाग ★

卐 कविता न तो कोई मत है न कोई विचार
पर है केवल बहता हुआ भाव
जिसका उद्गम रक्त भरा घाव
या फिर मुस्कराते मुख मण्डल का
स्नेहिल सहज सरल स्वभाव ★

卐 मैंने एक कवि से कहा
तुम्हारा मूल्य मृत्यु के वाद भी कोई सकेगा न जान
तो उसने कहा मृत्यु ही होगी उसके
यथार्थता की मौन पहचान
और जीवन में उसे जान न सके, क्योंकि
जीभ से अधिक शब्द उसके हृदम में थे
और हाथों से अधिक सशक्त थे, उसके अरमान ★

卐 एक कवि और विद्वान
दोनों से सामने हरा भरा खुला सुरम्य मैदान
विद्वान इसे पार करले तो वन जाय बुद्धिमान
और कवि पार कर ले, तो पा जाय सिद्धि स्थान ★

卐 जीवन को, उसके हृदय के संगीत को
गुंजित करने वाले, गायक को मिला न स्वर
तव उसके मन की बात कहने को
दार्शनिक ने जन्म से लिया आकार ★

卐 ज्ञानी ने जगत के रहस्य को जाना
तो उसके जीवन के कण कण से फूटा संगीत
लय, ताल, स्वर एक रस हो गूंज उठे
और वह कवि बन गया, गाये उसने प्रीत के गीत
कवि ने जीवन की अनुभूतियों की खोज में
विषय वासनाओं, के देखे उभरते दर्द भरे घाव
स्वाधीनता की तड़फ में देखा छटपटाता चेतना का स्वभाव
उसके हृदय की धड़कन में गूँज उठे अविरल सचेतन प्राण
और उसने ज्ञानी बन, लिया स्वयं को जान ★

卐 संसार का हर प्राणी एक सा ही गायक है
और हृदय की एक सी वेदना में
फड़फड़ाते हैं सबके अधर
पर किसी के साज, ताल, सुर ठीक है
और किसी का ताल बेताल
और बेसुरा है स्वर ★

卐 एक भूला सत्य मर गया
हजारों वास्तविकताएं वसीयत में छोड़ कर गया
जो उसकी अर्थी व समाधि में आगई काम
और प्रकट करने लगी अलिखत कथा तमाम ★

卐 धुन्धली कल्पनाएँ, भूले बिसरे चित्र
को मूर्तिमान किया और कहा उसे कला
प्रकृति और परमेश्वर के बीच बनाया सेतु भला
पर अनन्त में पहुँचा
तो अलिखित कविताओं व
अचित्रित चित्रों का समूह ही मिला ★

卐 धरती, आकाश के पन्नों पर
वृक्षों की लेखनी से, लिखती है-लेख
पर जब हम वृक्ष काट कर
उसका कागज बना लेते हैं
तो उस पर लिखे अपने खोखले
विचारों को ही पाते हैं-देख ★

卐 स्वप्न अपनी ही काल्पनिक रचना
जिसका सृष्टा और दृष्टा है
स्वयं का अचेतन मन
और इसीलिये हम उसको
कहते हैं—स्व-पन ★

卐 हमारे जो दिख रहे हैं
धर्म, नीति, आचरण भरे व्यवहार
वे कभी नहीं छू सकते हैं जीवन
क्योंकि वे केवल हैं अपने ही फैलाए हुए स्वप्न ★

卐 धरती की गहराई में वीज डाले
तो लहराते फूलों का मिल गया वरदान
और अपने सपनों को आकाश में बिखेरा
तो रुपहली प्रेयसी का फल गया अरमान ✶

卐 किसने कहा, स्वप्न देख कर भाग जाना
श्रेयस्कर तो है कि स्वप्न देखकर जाग जाना
भागने की कोशिश की तो
स्वप्न चारों ओर छायेगा
और जागने की कोशिश की तो
स्वप्न कभी न आयेगा ✶

卐 हर वस्तु अपने आप में है सुन्दर
और वही आंख उसे देख सकती है
जो गहराई से झाँक सकती अन्दर
और यदि हमारा हृदय है उज्जवल और सुन्दर
तो हमको सौन्दर्य ही दीखेगा
सभी जगह सब वस्तुओं के अन्दर ★

卐 देखने वाले की आँख में
सौन्दर्य की जगमगाती ज्योति
से अधिक ज्योतिर्मय है
चाहने वाले के हृदय में उसके प्रीत का मोती ★

卐 अत्यन्त लावण्य मयी सुन्दरता का
मैं बन गया गुलाम
और जब पूर्ण सौन्दर्य देखा और परखा
तो मेरे बन्धन टूट गये तड़ातड तमाम ★

卐 तुम भी सुन्दर, मैं भी सुन्दर
हमारी सुन्दरता से बनी यह धरती
प्रेम की किरणें जहां हैं झरती
हमारे प्रेम ने फैलाया प्रकाश
जिसमें प्रकट हुआ परमेश्वर अविनाश ★

卐 जीवन भर हम सौन्दर्य की खोई पूंजी
खोजते रहते हैं
और खोज की उन सब विधिओं व प्रतिक्षाओं को
हम जीवन की गति और प्रगति कहते हैं ★

卐 प्रेम है, बारीक सूक्ष्म कोमल घटना प्रवाह
वह वंचित रहता है इससे जिसने की इसकी चाह
पर जिसने माँगा ही नहीं उसे स्वयं मिल
गया, असीम अथाह ★

卐 प्रेम है ऐसा दिव्य शब्द
जिसे लिखने वाले प्रेमपूर्ण हाथ
और जिसे ज्योतिर्मय पृष्ठों पर
आनन्द व प्रेम से परिपूरित हो
लिखा किसी ने स्नेह के साथ ★

卐 मोती वह ज्योतिर्मय मन्दिर है
जिसे दुख और कष्ट के हाथों ने
एक रजकण के आस पास किया निर्माण
और प्रेम और आनन्द पूर्ण प्रभो के हाथों ने
विवेक और चेतना के स्वर्णिम कणों से
बना दिया अनुपम इन्सान ★

卐 बुल बुल के प्रेम भरे गीत तभी फूटते हैं,
जब वह अपने हृदय को देती चीर
और नयनों में छलकता नीर
इसी प्रकार जीवन की गहराइयों में से
प्रेम का श्रोत तभी फूटेगा
जब हम प्रभो के मिलन की तड़फ में
हृदय फाड़कर, बतादें हमारे चाह की पीर ★

卐 मैं आपको प्रेम देता हूँ तो यह भिक्षा नहीं, है हृदय का दान
और आप प्रेम देते हैं, तो मेरी मांग पर नहीं
केवल करते, भावों का प्रतिदान
प्रेम लेने व देने वालों में, न कोई भिखारी, न दीन
जिसने दिया या लिया, दोनों हो गये प्रभो में लीन ★

卐 हृदय है बहती नदी
मन है स्पंज समान
आश्चर्य इस बात का है
कि बहते रहने की अपेक्षा
हम चूसने में ही समझते हैं
अपनी शान ★

卐 आत्मा के साथ, शरीर का निर्माण होते ही
मेरा जन्म हो गया
और जब आत्मा और शरीर के बीच
अभिन्न प्रेम होकर वे एकाकार बन गए
तो मेरा जन्म खो गया। ★

卐 माता के मन के, शान्त अरमान
हृदय वीणा की अप्रकट तान
प्यार से संजोये बच्चे के
होठों पर, सहजखेल कर
प्रकट करती सुखद जीवन संगान ★

卐 बहुत समय तक माता के नींद के
स्वप्नों का बने सहारा
और आँख खुली तो जन्म हो गया तुम्हारा
फिर वर्षो तक, तुम हो गये, एक से अनेक
कुछ का तो पश्चाताप हुआ
और ठीक निकल पाए कुछ एक ★

卐 पत्नी पति से प्रेम करती है
और संतान को प्रेम करती है माता
पर पति या पुत्र के माध्यम से
व्यक्ति अपना ही अपने प्रति प्रेम है जताता ★

卐 चतुर पत्नी वही है जो जानती है
कब किस पर रखनी है दृष्टि ?
और कब किसकी दृष्टि से ओझल कर
अपने अनुकूल बना लेती सृष्टि ? ★

卐 नारी चरित्र को जिसने लिया है जान
प्रतिभा की, उसे हो जाती सूक्ष्म पहचान
मौन के रहस्यों से उसका हो जाता साक्षात
और मधुर स्वप्नों से जाग कर
वही देख पाता, मधुर प्रभात ★

卐 स्त्री के मन में सौन्दर्य का अर्थ
है शक्ति और बल
और पुरुष के मन का सौन्दर्य है
कमनीय कोमल नारी का तन चंचल ★

卐 एक सवल साहसी नर
एक कोमल स्नेहिल नारी
दोनों ने एक दूसरे पर दृष्टि डाली
कि सृष्टि ने पा लिया आकार
और जब दोनों ने एक दूसरे को छू लिया
तो अनन्त की आत्मा ने पा लिया विस्तार ★

卐 हर व्यक्ति जगत में
दो नारियों से करता है अवश्य प्यार
एक तो वह जिसका वह
अपनी कल्पना से वनाता आकार
और दूसरी वह जिसके जन्म के
प्रकट नहीं हुए अभी आसार ★

卐 मैंने देखा एक स्त्री को
और उसे अच्छी तरह लिया पहचान
उसके अगणित अजन्मे वच्चों को लिया जान
और उसने मुझे देखा
लिया मेरे पुरखों को जान
जिनका उसके जन्म के पूर्व
हो चुका था अवसान ★

卐 आओ हम तुम आँख मिचोनी का खेलें खेल
और फिर लगाएं एक दूसरे का पता
हृदय में छिप गए तो
अपने को तुम स्वयं ही दोगे बता
और शरीर में छिप गये
तो खोजना हो जायगा व्यर्थ
मैं भी चाहूँगा तुम सदा रहो लापता ★

卐 किसी कोमलांगी के आँख के छोटे से
डबरे से निकली, आँसुओं की धार
और सागर की विशाल जल राशि में
भरा है एक सा ही खार
एक उमड़ने पर हिला देता, सृष्टा का हृदय
और दूसरा हिला देता है, उसका संसार ★

卐 नारी तुम धन्य हो कि
कष्ट, पीड़ा, विषाद को काँख में छिपाकर
कोमल और मधुर रहा, तुम्हारा स्वभाव
अभावों के चक्रव्यूह में फंस कर भी
होठों की, हल्की सी मुस्कराहट के आवरण में,
छिपा दिये तुमने अपने चेहरे के भाव ★

卐 नर और नारी ने परस्पर चूम लिये
एक दूसरे के अधर
और लगा कि एक दूसरे के प्यार से आनन्द पाया
पर सच तो यह है कि
अधरों के बीच हमने अपना ही प्यार सहलाया
और अपने से अपने को ही आनन्द केवल आया। ★

卐 तुम मुझे प्रेम करती रहो और मैं चाहूँ तुम्हारा प्यार
या मैं तुम्हें प्रेम करता रहूँ और तुम मुझे मान लो भरतार
इससे हम दोनों ही रहेंगे गुलाम और दीन
पर जिस क्षण हम एक दूसरे में झांक कर
अपने से ही प्रेम करने लगेंगे
उसी क्षण हम सच्चिदानन्द बनकर होंगे स्वाधीन ★

卐 पुरुष चित्त में गति है प्रगति है
और है सृजन की शक्ति
उससे भी महत्वपूर्ण है स्त्री चित्त
जिसमें स्थिति से है परम्परा है
और है जगत् को पोषण करने की युक्ति
इसलिये सारे कार्य प्रारम्भ किए पुरुष ने
और स्त्री चित्त बनकर उसने पाई मुक्ति ★

卐 स्त्री का अस्तित्व है, शाश्वत सम्पूर्ण
जो श्रद्धा से जग की समग्र से देता जोड़
पुरुष विश्लेषण कर, जीवन के अणु अणु को देता तोड़
उत्तेजना अनुशासन में पलता, पुरुष जीवन
समर्पण व विसर्जन से भरा, नारी के तन का कण कण
मनुष्य की महत्वाकाँक्षा व भविष्य दृष्टि ने
पैदा किया केवल तनाव
नारी ने वर्तमान में जी कर
अस्तित्व का मुखरित किया बहाव ★

卐 काम का प्रारंभ होता, सदा दूसरी इन्द्रियों से
यौन पर होता उसका सुखद चरमअंत
जहाँ समय, अंह और विचार
समाप्त हो जाते हैं, और तन पर छा जाता शून्य अनन्त ✶

卐 तर्क और बुद्धि है नर, भावना और श्रद्धा है नारी
दोनों के समन्वय से, संचालित होती सृष्टि सारी
भावना के आगे, जब बुद्धि बन गई लाचार
तो काम से आहत होकर, नर ने मानी हार
और जब बुद्धि ने, भावना पर किया प्रहार
तो अंह ने सीना तानकर, किया भीषण नरसंहार ✶

卐 मनु के पास थी बुद्धि अक्षय, श्रद्धा के पास
था सम्मोहक हृदय
मनु ने तर्क से हिसाब लगाया,
श्रद्धा के हृदय में प्रकाश नहीं आया
वे एक दूसरे से बिना मिले रह गए
सृष्टि के सारे फूल अनखिले रह गए
मनु की बुद्धि में हुआ, समग्रता का विकास
श्रद्धा के हृदय में प्रेम का फूट पड़ा प्रकाश
दोनों हो गए एकाकार,
अर्द्धनारीश्वर ने ले लिया अवतार ★

卐 श्री कृष्ण थे अलौकिक सतह का विस्तार
और राधा में था न, गहराई का पार
श्री कृष्ण राधा को पाने, आतुर हो उठते हर बार
और वह जन्म जन्म तक प्रतीक्षा करने रहती तैयार
एक घटना थी, दूसरी प्रवाह
इसलिये रह सकी उन्हें एक दूसरे की चाह
अस्तित्व के साथ वहीं हो सकता एकाकार
प्रार्थना पूर्ण प्रतीक्षा में दिया, जिसने जीवन वार ★

卐 राधा ने श्रीकृष्ण को समर्पित कर
अपना गर्व "मैं" दिया
और श्रीकृष्ण ने 'तू' भूलकर
उसे अपने में रमा लिया
'तू' और 'मैं' दोनों हो गए संलीन
राधा और श्रीकृष्ण हो गए सदा स्वाधीन ★

卐 युगों युगों में सोए हुए है शेष नाग पर
भगवान् विष्णु लक्ष्मी के साथ
उनके तन को पुलकित कर रहे हैं
उनकी चंचला के हाथ
क्षणों में कट रहा है, युगों का काल
जैसे उड़ जाता उषा का रंग लाल ★

卐 राधा ने श्रीकृष्ण से कहा
दो मिनट तो, बैठिए आप मेरे पास
आपको देखने की, हर समय लगाए बैठी आश
श्रीकृष्ण, उसके पास, घंटों बैठे, बहुत ही निकट
पर राधा के, पूरे हुए नहीं, कभी दो मिनट
प्यार की गहराईयों में रुक जाता काल का प्रवाह
समय कभी माप ही नहीं सकता
दो गहरे हृदयों की चाह ★

卐 कल तक राधा कहती थी
मैं आपकी बन गई छाया
तन मन जीवन हो गया एकाकार
मेरा कुछ भी अलग न पराया
आज रुठ गई तो कहने लगी रहूँगी अलग
कर दो स्वामिन् मुझे आपसे विलग
श्रीकृष्ण ने कल की बात याद दिलाई
और स्नेह से रखा सर पर हाथ
कि दोनों बोल उठे
जन्मजन्मान्तर हम रहेंगे साथ ★

卐 राधा ने कहा भगवान मेरे तुच्छ अपराधों के लिये
आपने मुझे कभी कुछ कहा ही नहीं,
मैंने कभी आपका उपालंभ सहा ही नहीं,
केवल प्रशंसा पात्र बनकर, मुझसे जाता रहा ही नहीं।
तो भगवान् ने कहा कि
तुम्हारे छोटे छोटे अपराधों का यदि मैं लगाता योग
तो गणित में ही उलझ जाता,
और प्रेम और आनन्द की भाषा में
तुम्हारे गुणों का सुख कभी पाता न भोग ★

卐 गोरी ने गिरीश से कहा
आप मेरी करते नहीं परवाह
और मुझे निरन्तर रहती आपकी ही चाह
आप दूर रहें तो मैं चली जाऊंगी घर
सृष्टि रुक जायगी, अकेला क्या करेगा नर
दो एक जोर से डाँट
फिर संकल्प लिया, कि जन्म जन्म अभिन्न रहेंगे
तो अजन्मी सृष्टि के, चेहरे पर छा गई मुस्कराहट ★

卐 गोरी और गिरीश के, नित्य हो जाती तकरार
और फिर उभर कर, फूट पड़ता गहरा प्यार
सौगन्ध भी खाई, पर तकरार रुकी ही नहीं
प्यार की ऊंचाइएँ, तनिक झुकी ही नहीं,
तब समझ में आया कि उनका
इतना अनन्त और असीम है प्यार
कि उस पर, तनिक सी चोट
पैदा कर देती तकरार ★

卐 नदी के तट पर, इधर रेत उधर झाग
मेरे चरण बढ़ रहे हैं, उस पार
बिखर गये सब झाग, खा हवा की मार
मिट गये चरण चिन्ह, सह पानी का बहाव
पर अनन्त काल तक रहेगा,
नदी का तट और पानी की धार ★

卐 जगता हूँ तो सब कहते,
है अनन्त समुद्र और तट अनन्त,
सारी दुनियाँ यह रजकण है,
पल पल क्षण क्षण हो रहा अन्त
स्वप्न में मैं सब से कहता,
मैं स्वयं अनन्त, असीम सागर
है तीन लोक मेरे तट के रजकण,
मैं हूँ विशाल नटवर नागर ★

卐 सागर के पास बैठा, जब मैं उसके साथ
और सरिता के बारे में की बात
तो उसने मुझे काल्पनिक व अधिक बात
बनाने वाला कह दिया,
फिर मैंने एक दिन सरिता से की सागर की बात
तो उनसे मुझे निंदक और घटा कर बात
बताने वाला कह दिया ★

卐 जिसने सुख चाहा, माँगा, उसने पाया सदा दुख
और जिसने दुख को स्वीकार किया
उसे मिला, अनचाहा सुख
जो जैसा है उसे स्वीकार करने का, जिसने समझा है मर्म
उसके लिए सर्वत्र आनन्द है और वहीं पर
जागृत होता है धर्म। ★

卐 आनन्द सुख और ज्ञान व्यक्ति की निजी संपति है
जिस पर है नहीं किसी का अधिकार
जब चाहा अंतर्मुख बन कर प्राप्त किया
और मिल गया वहीं असीम अन पार
इस संपति को घेरे हुए है तनकी दीवार
जो बाहर से तो है बंद और अन्दर
खुलता है जिसका द्वार ★

卐 जिसके जीवन में पवित्र विचारों
के झरोखे से झाँकता
सत्य व हर आया
उसके संग आनन्द सदा रहेगा
पीछा करेगा, जैसे तन की छाया ★

卐 दीपक बनकर आसपास किया प्रकाश
पुष्प बनकर, आसपास फैलाई सुबास
सरोवर बनकर, किसी की बुझाई प्यास
हृदय देकर, किसी का मिटाया संत्रास
विशाल सृष्टि में मेरी साधना लायेगी
निश्चित ही फल
मेरा प्रकाश, सुबास व मीठास देगा
सारे विश्व को संबल ★

卐 बगिया में फूल झूम झूम कर मुस्करा रहे थे
मादक सुवासित गंध लिये इतरा रहे थे
माली ने कहा "फूलो' फूलो मत
तुम्हारा जल्दी होना है बलिदान
तो फूलों ने सोल्लास कहा" सृष्टा बतादे
हँसते हँसते बलिवेदी पर चढ़ने से बड़ा जग में
है कौनसा वरदान ?" ★

卐 बागद के, न तो फल लगते हैं, न पुष्प खिलते हैं
पर सघन छाया देकर, वह देता सबको विश्राम
इसी आशायें कि कोई बुद्ध वहाँ,
बोधि प्राप्त करेंगे,
या राह चलते, बसर करेंगे कोई राम ★

卐 आज तेरी खुशी के खिल रहे हैं फूल
या कि तेरे दुख के चुभ रहे है शूल
चुनाव किया कभी, और अब हो रहा अनुभव
बीज बोया कभी और लाया अब फल
बीज और फल के बीच लम्बा अन्तराल
जन्म और मरण में छिपे इसमें अनेकों सवाल ★

卐 जीवन की पोथी थी सहज सरल,
पर उसका, जटिल, क्लिष्ट, हो गया अनुवाद
ज्ञान का स्वरूप था, प्रकाशमान् निर्मल
पर उसके संचय में हो गया घोर विवाद
सच तो यह है कि हम भाव और प्राण को भूल गए
और मस्तिष्क के विचारों का, समूह ही रह गया याद ★

卐 एक कहता, आधी गिलास भरी हुई
दूसरा कहता है, आधी खाली
एक रात के, आगे पीछे देखता है दिन
दूसरा दिन के, आगे पीछे देखता रात काली
एक को, कांटों से घिरा लगता सुमन हैं
दूसरा, कांटों की गोद में पाता गुलाब की लाली
सारे जगत के दृश्य, एक से रहेंगे सदा
दृष्टि एक विषाद भरी, एक आनन्द से मतवाली ★

卐 हममें से कुछ को कहते काली स्याही
और कुछ को लोग कोरे कागज बतलाते
पर कालापन नहीं होता
तो हममें से कुछ गूंगे ही रह जाते
और सफेदी नहीं होती
तो कुछ साफ अन्धे नजर आते ★

卐 आँखों में पड़ा तुच्छ तिनका
ओझल कर देता पहाड़
कानों में ठूँसा रुई का फुआ
सुना नहीं सकता शेर की दहाड़
दाँतों में रहा नमक का कण
खारा कर देता सारा ही अन्न
दृष्टि सही बनती नहीं तब तक रहता अज्ञान
और परमेश्वर की सत्ता से
वह रह जाता अनजान ★

卐 मन्द गति वालों पर तो आता है तरस
मन्द मति वालों पर जाते ही बरस
यह बड़ा ही विचित्र व्यवहार है आपका
कि आँख के अन्धे को मानते लाचार
और हृदय के अन्धे को ताड़ते बेकार ★

卐 कुछ लोगों को हँसते हँसते रोते देखा
कुछ को प्रकाश में सोते देखा।
कुछ रोने में हँसते जाते थे
कुल अन्धेरे में अपने को जगा पाते थे
जागे और हँसे वे ही जिनको जीवन से प्यार
रोए और सोए वे ही जो मानते जीवन बेकार ★

卐 अपने धन दौलत वैभव को फैला कर
किया आपने मेरा सम्मान
और मैंने आपको दिया हृदय का दान
पर दुख हुआ मुझे उस समय
जब आपने अपने को आतिथ्य देने वाला समझा
और मुझे मान लिया मेहमान ★

卐 कितना मुर्ख है, वह आदमी
जो अपने आँखों की घृणा पर
चढ़ाता होठों की मुस्कराहट का झोल
और कितना अन्धा है वह आदमी
जो अपने जेब के सोने चाँदी से
मेरे हृदय की लेना चाहता है मोल ★

卐 अपने सामर्थ्य से जो अधिक देता है
उसे कह सकते हैं सच्चा दान
और जो आवश्यकता से कम लेता है
उसका सच्चा है स्वाभिमान
नर और नारी तो सभी है
सज्जन की है केवल यही पहचान ★

卐 अपने स्वजन मित्र का दुख देख न सके
और तुमने कर दिया कुछ दान
अब उसे दया कह कर स्वर्ग खरीदना चाहते हो
तो यह भारी भूल होगी
क्योंकि यह तो तुमने किया है
केवल अपने पर अहसान ★

卐 जो मुझे बुद्धि और विवेक की बातें बताए
उसे मैं चाह कर करता हूं प्यार
और जो अपनी कल्पना के स्वप्न खोले
उसको मैं सदा करता रहता मनुहार
पर मुझे उनसे झिझक और लज्जा है
जो करते मेरी सेवा और देते सत्कार ★

卐 दर्पण के सामने खड़ा नवयुवक
गर्वित होकर बार बार निरख रहा था अपना नूर
कि अन्दर से आवाज आई
जरा भीतर के यन्त्रालय को भी देख लेना
जो तेजी से उड़ेल रहा है गन्दगी भरपूर ★

卐 गंगा का गन्दा जल भी पवित्र कहलायगा
स्वच्छ श्वेत कफन का कपड़ा किसी भले
आदमी के कभी काम नहीं आयगा
अन्दर की जागृत चेतना जहाँ हैं
वहाँ गौण बन जाता, ऊपर का व्यवहार
और अन्तर जहाँ रोता है
वहाँ सारे कृत्रिम आचरण लगते निस्सार ★

卐 दिन पर कागज के धरातल पर
मुंह के बल चलती रही
चाकू की धार पर जिन्दगी बार बार पलती रही
विश्वास भर कर पेंसिल ने कहा
संसार का व्यवहार कैसा है निराला
तो प्रत्युत्तर मिला कि ऐसा ही फल उन सबको मिलता है
जिनका अन्दर का हृदय है काला ★

卐 सरोवर के किनारे कौवे ने आकार
पनिहारिन के भरे घड़े से पिया पानी,
तो आश्चर्य हुआ कि अपरिमित स्वच्छ जल राशि को छोड़
सीमित घड़े पर चोंच मारने की, उसने क्यों ठानी ?
पर क्या यह सच नहीं है कि विश्व मैत्री के अपार प्रेम
को छोड़, हमने अपने को सीमित रखने की बात ही जानी

卐 हरी हरी घांस पर खड़खड़ा कर सूखा पत्ता गिरा
घास बोल उठी, आराम कर दिया हराम
पत्ते ने कहा, देवी आपको है आराम की चिन्ता
और मेरे तो संकट में पड़ गए हैं प्राण ★

卐 पतझड़ की ऋतु में, मैंने अपने बाग में गाड़ दिये
सारे अपने शोक संताप, बेकार
बसंत में वहीं मिल गई फूलों की बहार
पाड़ोसियों ने आकार तभी मांगी एक चीज
कहा, अगली ऋतु में हमको देना
इन फूलों का बीज। ★

卐 लोग कहते हैं कि तुम जानते व्यवहार
क्योंकि जिनकी हैं कल्पनाओं से प्यार
और जो बनाते, सुखद मधुर स्वप्नों का संसार
उनके गाढ़े पसीने की कमाई,
तुमने ली छीन, और रोटी धाप खाई
और वे आंख फाड़ रहे तुम्हें निहार ★

卐 जीवन के न्याय पर विश्वास
कैसे छोड़ दूं होकर उदास
जब मैं देखता हूं कि
मखमली गद्दों पर, सोने वालों से
अधिक कठोर धरती पर, सोने वालों के
स्वप्नों में बसता है, सुखद मधुमास ★

卐 जिस दिन स्वतन्त्रता से
न्याय का साथ जायेगा छूट
निश्चित है, उसी दिन
दोनों का ही भाग्य जायगा फूट ★

卐 एक जड़ मूर्ख इन्सान
एक अपूर्व बुद्धिमान
इन्सान के बनाए नियमों को
तोड़ने में दोनों हैं एक समान
पर एक सदा के लिए, पकड़ में आ जाता है
और दूसरा पकड़ा जाय, तो साफ छूट जाता है। ★

卐 अपराध क्या है ? मैं रोज देखता हूँ
किसी आवश्यकता का नाम,
या जहाँ अस्त होता राम
उदय होता काम
उसके प्रकट हैं लक्षण तमाम ★

卐 मैं अपने उन सब अपराधों को करता स्वीकार
जिनका, मैंने, स्वप्न में भी किया, न विचार
केवल इसलिए कि, मेरे संगति में,
संगीन अपराधी भी बैठ जाये,
तो हीन भावना का, हो जाय न शिकार ★

卐 जेल कभी बुरी नहीं होती
बुरी है तो एक क़ैदी की कोठरी से दूसरे
की कोठरी के बीच की दीवार
वरना जेल के निर्माता रहें, रहें सतत पहरेदार
मुझे तनिक दुख नहीं है क्योंकि जेलखाना
ही तो है सारा संसार ★

卐 एक बड़ा धनवान अमीर
एक गरीब निर्धन दास
दोनों रहे उदास
एक वर्ष भर की भूख
एक घड़ी भर की प्यास ★

卐 सिंहासन से उतरे राजाओं का ाल
मन्त्री पद से च्युत वृद्ध नेता की चाल
पुराने एम. एल. ए. की चुनाव में हार
धन्ना सेठ पर पड़ गई घाटे की मार
तेज तर्रार अफसर रिटायर हो जाय
हसीन वेश्या की जवानी खो जाय
ये सब अतीत की राख सर पर ढो रहे हैं
और चूक गया अवसर कह कर पल पल रो रहे हैं ★

卐 मैंने केवल दो ही तत्व जाने
एक सौन्दर्य, दूसरा सत्य निराकार
सौन्दर्य वसता है प्रेमियों के हृदय में
जग मगाहट करता है जिसमे संसार और सत्य
किसान मजदूर की भुजाओं से फूट कर
कृषि और उद्योगों में लेता आकार ★

卐 हरे भरे लहलहाते खेतों में
मस्ती भरे गीत गाकर नाचता किसान
सूखी रोटी खाकर पथरीली जमीन पाकर
गहरी निद्रा में सुलाती उसे दिन भर की थकान
है भुजाओं में शक्ति जिसके पाँवों में गति
सच्च कर्मयोगी वही, उसका निश्चित है ही कल्याण ★

卐 दीपक के पूरे तेल का शोषण कर
लौ, ने अपनी ज्योति समझ उठाया सर
अगणित मजदूरों के श्रम से अपना पोषण कर
धनपति ने अपना धन समझ भरा अपना ही घर
पर एक ही हवा के झोंके से लौ की मिट जाती है हस्ती
और इनकिलाब की आँधी आने से
उजड़ जाती श्रीमन्तों की बस्ती ★

卐 भव्य भवन के निर्माता, टूटी झोंपड़ी में करते बसर
कसीदा और जरी के थान बुनने वाले.
ढांक नहीं सकते अपना तन
धरती में रक्त और पसीना बहा धान उत्पन्न करके
कृषक भूखा ही रहता, पाता नहीं पूरा अन्न
अगणित श्रमिकों के हाड़ मांस का श्रम
बढ़ा रहा केवल श्रीमन्तों के तिजोरियों का धन
इस स्थिति को कहाँ तक टालोगे, कहकर कर्मों का फल
इनक्लाब का एक ही तूफान देगा
समाज की व्यवस्था बदल ☆

卐 कांटों की बाड़ से घिरे वृक्षों पर जब फल लद जाते हैं
उनके मीठास व रस को देख राही ललचाते हैं
चोरी छिपे पत्थर या लाठी से करते प्रहार
पत्ते और टहनियाँ टूट कर पड़ती कांटों के पार
इसी तरह पूंजी के अनावश्यक संग्रह को
सह नहीं सकते दीनहीन
सहज नहीं मिलने पर चाहते
लेना उसे झपट और छीन ★

卐 वेघरवार निर्वस्त्रों के खाली पेट की आग
में जलकर राख वन जाते हैं दिल के भाव
चेतन को जागृत करने की वात उन्हें भाती नहीं
आत्मा और परमात्मा के ज्ञान की वात सुहाती नहीं
पीडित कर रहे उसे अपनी आवश्यकताओं के घाव
जो तीर से बिंध गया, उसे तो चाहिये उपचार
क्यों कहाँ कैसे आया ? यह पूछना बेकार
भूखे पेट न रट सका न बन सका राम
तृप्त आत्मा में ही केवल रम सकेगा
भगवान का नाम ★

卐 हर साँप से संपोलिया जन्म पाता है
जो बडा होकर साँप को निगल जाता है
समाज से पैदा होती युवा शक्ति
जो विद्रोह कर उसी से पाती है मुक्ति
हर सभ्यता और संस्कृति में पनपता नव उल्लास
जो नव निर्माण के नाम पर उसका मिटा देती इतिहास
जन्म का मौत में होता विस्तार
सृजन और विध्वंस को हम कहते संसार ★

卐 हर युग में विद्रोही ने परम्परा का विरोध किया
और सत्ताधीश श्रीमन्तों ने दिये उसे प्रलोभन
कुछ डिग गये पर कुछ ने संघर्ष झेल कर
भी कर डाले परिवर्तन
समाज में जगा विश्वास जागरण की जगी आश
फिर परिवर्तन ने परम्परा का कवच पहन लिया
विद्रोही ने विद्रोह दबाने सत्ता को गहन किया
परम्परा और विद्रोह का इतिहास दुहरायेगा
विद्रोह परम्परा बन गई तो फिर विद्रोह आयेगा ★

卐 दार्शनिकों का एक झुण्ड जा रहा था सरे बाजार
सिर पर टोकरे रखे बुद्धि लो, बुद्धि लो
की कर रहा था पुकार
कितना विचित्र है कि
दार्शनिकों को भी भरना पड़ता जब पेट
तो बुद्धि का चढ़ाना पड़ता श्रीमन्तों के भेंट ★

卐 जीवन किसी दूसरे का अनुसरण नहीं
यह तो है स्वयं का स्वयं के द्वारा उद्घाटन
दूसरे के जैसे होने की प्रक्रिया ही नहीं है
यह तो स्वयं की खोज का करता स्वयं आयोजन
और इसका एक ही साधन
प्रभो की वेदि पर, कर दें प्राणों का अर्पण ★

卐 हमने एक दूसरे को नहीं जाना
न स्वयं को पहचाना
पर जब तुम्हारे हृदय की धड़कन में
अपना स्वर पाया
और दर्पण में तुम्हारा चेहरा देखकर
कह न सका पराया
तो मैंने तुम को भी जान लिया
और स्वयं को भी पहचान लिया ★

卐 न व्यवस्था थी न आकार
डगमगा रहे आचार—विचार
सद्बुद्धि ने हाथ पकड़ दिया पवित्रता का सम्बल
क्रिया शील हो गया तन
सीधा हो गया मन का बिगड़ा सन्तुलन
सफलता के राजमार्ग पर प्रशस्त हो उठा जीवन ★

卐 मैंने अपने ही जीवन से पूछा
मैं चाहता हूँ सुनना मृत्यु के बोल
और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा
जब जीवन गर्ज कर जोर से बोला
देख लो मौत मेरे अन्तर को खोल ★

卐 दूसरों की सेवा में खपा देना चाहता हूँ अपना जीवन
पर यह सम्भव तभी होगा
जब मेरे भीतर के 'मैं' से खाली हो जायगा मेरा मन
और दूसरों के भीतर झाँकने पर
पाऊंगा मेरा ही नाचता हुआ तन ★

卐 जिस प्रभो की कृपा से जन्मते ही दूध मिला
और प्राणों में मिला श्वांस
जिसने हमारे जीने का किया योजना बद्ध इन्तजाम
उससे उदास ही हम भूल गए उसका नाम
और अपनी विशद्योजना बना कर
उसकी विफलता से हो गये निराश
और खो बैठे उसका विश्वास,
तभी प्रारम्भ हुआ सन्त्रास ★

卐 कितना आनन्दमय है वह जीवन
जो फुल की तरह, हल्का, सुवासित बनकर
प्रसन्नता से झूम रहा है
जिसके स्वच्छ सुन्दर लुभावने तन को
रंगीन तितलियों का झुंड, प्यार से चूम रहा है।
और कितना भार भूत, दुखी है वह जीवन
जो हड्डियों के ढ़ेर की तरह कुरुप गंदा, भारी
कि जिसके दुर्गन्ध से, पीड़ित हो जाती दुनिया सारी। ★

卐 सारा विश्व एक पुल है
जिसमें होकर इस जन्म से होता है व्यक्ति पार
पर जिसने, इस पर महल बनाने का
प्रयास कर, रहने का किया विचार
उसके सारे स्वप्न ढ़ह गये,
और उसका आना हो गया बेकार ★

卐 एक वीज का व्यापक विस्तार
घेर सकता सारा ही संसार
और एक शुद्र इच्छा का जब होता विस्तार
तो घेर लेती स्वयं में सारा संसार
जिसका मिलता, कोई आर न पार ★

卐 जीवन स्वयं धारा है जिससे प्रवाहित है वेग और बहाव
उसे रोक कर साधना की नई धारा पैदा की
तो उससे आएगा उपद्रव और छायेगा तनाव ★

卐 जीवन अस्तित्व है, वर्तमान का अनुभव
भूत और भविष्य में न उसका अंत न उद्भव
पर कामनाओं से भरा हुआ मन
अतीत से लेता रस और भविष्य के देखता स्वप्न
कामनाओं से जब रीता हो जायगा मन
स्वयं ही प्रवेश कर जायेगा वहां जीवन ★

卐 जीवन के केन्द्र में पहुँच कर गहराइयों को
माप सकता केवल निष्काम मन
और काम युक्त मन तो बाहर की परिधि के
चक्कर काटा करता है
उसे पता ही नहीं चलता कहां बसता है जीवन ★

卐 गांधी पर लगी एक गोली ने
कोटि कोटि हृदयों को दिया चीर
और उनके कलेजे का रक्त
कोटि कोटि दृगों से वह गया बन नीर
एक व्यक्ति पर की गई चोट से
घायल हो गये कोटि कोटि जन
एक व्यक्ति की मौत से
सारा राष्ट्र हो गया मरणासन्न
एक व्यक्ति मरा इतिहास यह सुनायेगा
युग युग तक जीवित है सत्य यह गायेगा। ★

卐 अपने पूर्वजों की परम्परा इतिहास
पर पीछे देखते हुए हम करते हैं पाप
और आगे देखकर भी हम करते वही
जब आने वाली संतानों पर
अधिकार जता कर देना चाहते संताप ★

卐 शांति के लिये जिसने प्रयोग किया बल
उसके सारे प्रयास हो गये निष्फल
आपस में एक दूसरे को समझने का किया विकास
कि शांतिमय संसार में छा गया उल्लास ★

卐 सारे ही जन कहते हैं कि पेट तो ज्यों त्यों भर जाते हैं
पर मँहगाई के जमाने में बचत होती नहीं
और पेटी भरती नहीं
तो मैंने कहा पेटी तो फिर भी भर जायगी
पर पेट कभी भरा न भरेगा
क्योंकि पेट की भूख कभी भरती नहीं। ★

卐 आंधी और तूफान में हिल जाती हैं
भव्य इमारत और कठोर चट्टान
पर मखमली दूब नहीं छोड़ती अपना स्थान
और उसकी अपरिवर्तित रहती शान
तभी तो सच है कि जिसने की लाघवतास्वीकार
उस पर सारे प्रहार हो जाते बेकार। ★

卐 एक ही धरती एक ही आकाश
एक हवा पानी एक ही प्रकाश
बाग में फूले नीम इमली और आम
कड़वा, खट्टा मीठा फल देते तमाम
क्या करे वातावरण, कुल या परिवार
स्वयं की कभी प्रकट करती व्यवहार। ★

卐 प्रमादी और विषयासक्त सोते हीं रहें
निष्क्रियता में जीवन वे खोते ही रहें
और अनासक्त अप्रमादी जागते रहे
दुष्कर्म उनसे दूर भागते रहै
किसी का जगना है ठीक और किसी का सोना
किसी को निष्क्रियता हैं श्रेष्ठ किसी का सक्रिय होना। ★

卐 तनिक से तुच्छ फलों को लेकर
खजूर का पेड़ अंहता से छूना चाहता आकाश
रस भरे मीठे आमों का वृक्ष
विनम्रता से धरती पर झुकने का करता प्रयास
तब लगता कि यह सच है
अल्पता और तुच्छता में पलता अंहकार
और पूर्णता व महत्ता में विनम्रता बनती साकार। ★

卐 जीवन की गहराइयों में उतरा तो पाया
न तो मैं हूँ पापियों से ऊँचा और उत्तम
और न अवतारों से हूँ मैं नीचा और अधम । ★

दुख और सुख के बीच जगता है चेतन
वही रुपान्तरित हो जाता मन
जिस प्रकार स्वर्ग और नरक के बीच
संक्रमण काल है, मनुष्य का जीवन ★

卐 सारे जग में एक ही क्रिया चला करती है
भरे को खाली और खाली को भरा करती है
पर अंतर्जगत में सारी क्रिया हो जाती है व्यर्थ
अंदर उतरे कि मिल जाता है जीवन का अर्थ । ★

卐 निर्मल मौन शांत अनाग्रही मन
बिना प्रतिरोध ग्राहक भाव से खींच लेता जीवन
तभी कोई सदगुरु जाता है मिल
और समर्पित जीवन में सुवासना जाती है खिल । ★

卐 दुख संत्रास व असफलताएँ बनती रही
जिसके जीवन का अवलंबन
फिर भी उनसे विलग रहा जिसका मन
और प्रसन्नचित पुरुषो के साथ,
जो आनन्द के गीत गाता
प्रेम की बाँसुरी बजाता
उसी को हम कहते हैं जागृत जीवन। ★

卐 जीवन स्वयं में है एक महत्वपूर्ण विधा और सुन्दर कला
जिसमें आनन्द का स्त्रोत और प्रेम का चित्र लगता भला
अहो भाग्य हमारा नित्य देखते प्रभात
आशा भरा प्रकाश, तेज उष्णता साक्षात
सिन्दूर लुटाती संध्या और सितारों भरी रात
ऐसा सुन्दर जीवन प्रभु की दया से मिला
पर सावधान बिना संरक्षण मुरझा न जाये
यह चेतन का फूल जो धरती पर खिला। ★

卐 मैं कभी कभी जानकर अपने लोगों के
धोखे और अत्याचार का हो रहा शिकार
और हँसता हूँ उनकी बुद्धि पर
जो समझते है कि मैं हूँ अनजान लाचार
मेरी तो आत्मा के हट रहे विकार
और इसलिये मेरा यह विचित्र व्यवहार। *

卐 चट्टानों के बज्र वक्षस्थल को चीर
स्थान स्थान से फूट पडता है नीर
और वहीं पर कोमल घास पत्ते और पौधे
घेर लेते चट्टान का शरीर
इसलिये यह सब ही तो है
कि कोमलता जहाँ तहाँ बना लेती स्थान
और छोटे छोटे पौधे छेद देते हैं कठोर चट्टान *

卐 छोटे छोटे से कंकड़ पत्थर पथ में ठोकरों की खा मार
अपने अस्तित्व को मिटा देने को रहते हैं तैयार
और तभी ठोकरों से पीसकर उनके रजकणों ने
आकाश में उड़कर करली सूर्य से बात
व हल्के बनकर ऊँचा उठने की बन गए
प्रेरणा साक्षात। ★

卐 एक गहरा व्यक्ति उतर रहा था गहराई में
और ऊँचा व्यक्ति रहा था ऊंचाई में
पर मुझे तो पसंद बड़े हृदय का वह व्यक्ति है
जो विशाल क्षेत्र में काटता है चक्कर
न गहरा उतर कर न ऊंचा ही चढ़कर ★

卐 महत्वाकांक्षा और कल्पना है जिनका जीवन
रहना चाहूँगा उनके साथ छोटा से छोटा बन
पर जो महत्वाकांक्षा रहित और कल्पनाहीन
उनमें बड़े से बड़ा बनकर रहने में भी
कसमसाहट कर रो पड़ेगा मेरा मन। ★

卐 जो तुम्हारा गौरव और सम्मान उस वस्तु में नहीं
जो तुम्हें प्राप्त हो रही अन्जान
पर उस वस्तु में है जिसकी छटपटाहट व तड़फ में
तुम कर सकते हो अपना जीवन बलिदान ★

卐 आज की प्रत्येक उपलब्धि के लिये
किसी एक का नहीं मान सकते उपकार
क्योंकि सभी उपलब्धियों के लिये
सभी व्यक्ति और समाज का ही है आभार
अतीत के प्राणी सारे हमारे साथ विता रहे जीवन
और हम उन्हें अतिथि मानकर करे उनका
सादर सत्कार। ★

卐 हमारे वचपन का नव प्रभात लेकर आया था
आशा और उत्साह
और उसमें नदी के श्रोत की तरह
पाया था आनन्द और प्रेम अथाह
पर ज्यों ज्यों आगे बढ़ा प्रवाह
तो हमने पाया कि वचपन का आनन्द कम हो रहा है
सुख और शांति की कल्पनाओं को व्यक्ति
प्रतिक्षण खो रहा है
कभी हम प्रवाह को देखते है और कभी
देखते उसका जल
पर यह कभी नहीं सोचा कि दें उसकी दिशा बदल ★

卐 कुँआ सोचता है जिसे आवश्यकता हो आए
सिर नवायें पात्र फैलाये और चाहे जितना जल ले जाए
पर मेघ पात्र अपात्र का विचार किये बिना
अपना अपनत्व देते हैं लुटायें
जंगल की सघन वृक्षावली को पानी दे पाए
गिरि शिखर घाटियों को प्यार से नहलाए
मरुवासियों को मीठा पानी दे प्यास बुझायें
अपने को विलीन कर स्वयं को मिटाए
ताकि उसकी संपत्ति जग के हित काम आए
और तभी सारा जग सदा सर्वदा मेघ के लिये
रहता है आँख बिछाए। ✶

卐 आकाश से बरसते पानी व ओलों से बचने के लिए
आकाश पर चंदोबा ताना नहीं जाता
पर स्वयं के ऊपर ही लगाया जाता है छाता
धरती की नुकीली चुभने वाली शूलों से बचने के लिए
धरती पर चद्दर बिछाया नहीं जाता
पर स्वयं के पैरों को व्यक्ति जूता पहनाता
दूसरों के हमले कब रुके भला हैं ?
लाख बार कह दें कर ले पुकार
साहस व शक्ति जुटाले स्वयं स्वस्थ बनकर
तो स्वतः हो जायगा उनका हमला बेकार ★

卐 जीवन में होश रहे, यह कोई प्रक्रिया नहीं है
किसी अन्य कार्य की प्रतियोगी, प्रतिक्रिया नहीं हैं ।
साथ साथ रहे चेतना और मन
ध्यान इसका प्रत्येक कार्य में रख कर भरे नवजीवन
केन्द्रित रहे ध्यान, करें क्रीड़ा वत् अभ्यास
चेष्टा न करनी पड़े करना न पड़े प्रयास
तभी सब कुछ रहेगा ताजा और नवीन
मन में रस फुटकर देता आकर्षण प्रवीन ★

卐 बाहर के जगत की जिज्ञासा से पैदा होता विज्ञान
और अंतस चेतना की खोज से जागृत होता ज्ञान
सूचना व स्मृतियों के निरंतर बदलते क्रम में
उभरता है पदार्थ विज्ञान
भाव अनुभूतियों के शाश्वत क्रम में
निखरता स्वयं का ज्ञान
इसलिये ज्ञान का स्रोत व संचय दोनों है अथाह
और विज्ञान का रुककर चलता बदलता प्रवाह । ★

तृष्णा है परिधि जिसका केन्द्र है लोभ
परिधि सफल हुई तो मोह हो गया
और असफल हुई तो उत्पन्न हो गया क्षोभ। ★

卐 जानता मैं विषय सभी विश्व के
दर्शन साहित्य, कला विज्ञान
मैंने इन पर दिये बहुत ही व्याख्या
पर मैं हो गया मौन
जब किसी ने धीरे से मुझे पूछा
"आप स्वयं है कौन ?" ★

卐 पूछा, "गुरुवर से क्या तीर्थ का रास्ता यहीं ?"
"पीछे चले आओ मार्ग मिल जायेगा सही"
वर्षों चलता रहा उनके पीछे दिन रात
तब यकायक रोष में भर कर गुरुवर बोले
"सही रास्ते तुमने मुझे पहुचाया ही नहीं।" ★

卐 स्वच्छ निर्मल तन मन लिये
हरिजन ने किया मंदिर में प्रवेश
अंदर बैठे काले कलूटे मैले कुचैले वेषधारी
पुजारी का चेहरा तमतमा उठा छा गया आवेश
वह चिल्ला उठा "चंडाल ! रहना द्वार से दूर
अंदर आ गया तो कर दूगाँ हड्डी पसली चूर"
दर्शनार्थी लौटता हुआ सोच रहा था
साफ सुथरे तन मन का मैं कैसे हूँ अछूत ?
और दर्शन में बाधक क्रोधी पुजारी कैसे हो गया देवदूत
चरित्र और व्यवहार का जब जग पूछेगा हाल
तो प्रकट हो जायगा कौन देवदूत कौन चंडाल ★

卐 आँख खोल कर देखा तो
हर चेहरे में देख सका मेरी ही परछाई
और कान खोल कर सुना तो
हर स्वर में मेरी ही आवाज आई
इसलिये तो कहता हूँ
कि जब तेरा मेरा मिट चुका
तो मेरे में स्वयं प्रकट हो गई प्रभुताई। ✱

卐 सत्य की खोज मैं यथार्थ निखर जायगा
स्वप्नों का संसार सारा निखर जायगा
उसी में प्रकट होगा महान सुख या दुख
जिसमें नंगा होकर व्यक्ति दिन से नाच जायगा
या फिर मायूस वन कर
फाँसी का फंदा ही खायगा। ★

卐 मैंने बहुत सारे धर्म ग्रंथ छान डाले
कंठस्थ कर लिये गीता वेद पुराण
और इसे मैंने स्वाध्याय लिया मान
पर मैंने कौन, कहाँ से क्यों आया ?
इसको जानने का कभी किया न प्रयास
और स्व को और गति बढ़ी नहीं तो रुक गया विकास
स्व का जिन्होंने अध्ययन किया, हो स्वयं मैं लीन
उसी तपस्या से हो गई आत्मा स्वाधीन ★

卐 विश्व की लबालब भरी झील में
सृष्टा ने मुझे कंकड़ बना कर फैंका, लगा जोर
हलचल मची लहरें उठी, मच गया शोर
मैं गहरे में उतर कर सिमट गया
तो सारा विघ्न ही मिट गया
और शांति छा गई सभी ओर ★

卐 जिस क्षण विषय से बदल कर विषयी पर जायगा ध्यान
मेरा जगत मैं ही हूँ और सारे कारण
भीतर हैं इसको हम लेंगे जान
सुख-दुख प्रीति घृणा मान और अपमान
अंदर ले जाकर उनसे करलें पहचान
अंदर बसे शत्रु का पता चल जायगा
उसी क्षण परम मित्र में वही बदल जायगा । ★

卐 जिसने कभी न की सुरक्षा की चाह
और अपने प्रति जो रहा बेपरवाह
एकाकी होकर खोज ली उसने अपनी राह
और शून्य बनकर पा लिया जीवन अथाह
और जिसने अपने सुरक्षा हेतु लगाया पहरा
उसकी चेतना हो गई मौन और प्राण हो गया बहरा
जग कर अभय बन, जो आगे न चला
मौत की छाया में वह प्रतिक्षण पला । ★

卐 स्वच्छ विशाल निर्मल जल का हौज होता
बहुत ही सुन्दर
पर उससे अधिक मैं चाहता हूँ छोटा सा गहरा
पानी का कुंवा पृथ्वी के अन्दर
क्योंकि वह युग युग तक विपुल जल बांटकर
भी कभी न होगा खाली
सागर या धरती के स्रोत करते है उसके
धन की रखवाली
जबकि हौज का पानी है कहीं से मांगा हुआ उधार
और रीता होने पर उसमें स्वयं ही फूट
नही सकती जल की धार
इसी तरह अंतकरण से जगे ज्ञान का खजाना है अक्षय
और पंडित या विद्वान के संग्रहित विचारों का
निश्चित है क्षय। ✶

卐 मेघ की अमृतमय बूंदों से धरती का कण कण मुस्कराता
अंकुरों से फूट कर हर पौधा झूम झूम लहराता
पर उसी से जवास का पौधा जलकर राख बन जाता
पारस के स्पर्श से लोह बन जाता है स्वर्ण
पर लकड़ी का डंडा साथ रहने पर भी
नहीं बदलता है वर्ण
तरुवर से छाया शीतलता और फल मिलते हैं
पर बबूल पर तो केवल काँटे ही काँटे खिलते है
ईर्ष्या हो, हठ हो, या कर्कश नुकीले भाव
सत्पुरुष भी बदल नहीं सकते उनके स्वभाव। ✶

卐 घृणा का मृत शरीर
जिससे आ रही वदवू जहाँ छा रही व्याधि
हममें से वहुत सारे अनचाहे भी
उसके लिये वन जाते कब्र और समाधि । ★

卐 गति और स्थिति दोनों ही है एक सत्य का नाम
काम करने का रहस्य है केवल विश्राम
काले धरातल पर ही उभरती है शुभ्र रेखा
विना अन्धकार के कव किसने प्रकाश है देखा
मरण का प्रारम्भ जन्म तो जन्म का अन्त है मरण
जन्म और मृत्यु का संयोग ही करता जीवन वरण
ऊँचे वृक्षों की गहरी जड़ों को झेलता भूतल
वर्तमान की जड़ है भूत तो भविष्य है फल
आदि से अन्त तक जीवन है एक प्रवाह
विपरीत सम्भावनाओं का योग जिसमें छिपा अथाह । ★

卐 माता पिता और पुरखों से हमको मिला वैभव और धन
परम्पराओं से वंधा जीवन
निश्चित कर गये वे हमारे सारे ही कर्म
नियम मर्यादा विचार और धर्म
हम जैन बौद्ध हिन्दू ईसाई पारसी मुसलमान
जन्म से ही है हमारी इनसे पहचान
कभी हमने अपने धर्म को खोजने या जानने
का किया नहीं प्रयास
जिसमें कि हमारे शक्ति और सामर्थ्य का हो सके विकास
खरा खोटा जो मार्ग मिल गया उसी पर चल रहे हैं
और धर्म कर्म नियम जो भी मिल गये उसी में पल रहे हैं। ★

卐 जिसने अमावस्या की रात में किया विद्युत प्रकाश
पवन और मेघों को नियन्त्रित कर वर्षा की वंधाई आस
पंक्षियों की तरह आकाश में भरली उड़ान
चन्द्रलोक पर उतर गया धरती का इन्सान
उभरती नदियों का वाँध दिया जल
सारे जग को नियन्त्रित कर मानव वन गया सवल
वही जाति धर्म राष्ट्र भाषा के वन्धनों में फँस रहा हर वार
और शक्ति खपा रहा उन्हें मजवूत वनाने में वेकार। ★

卐 चट्टानों से निकल कर निर्झर उन्हें देता है छोड़
धीरे धीरे बहकर विशाल जल राशि से देता नाता तोड़
सतत और धीरे चलने वाले भी बिना अवरोध
समग्रता में मिल जाते हैं पाकर के बोध। ★

卐 पानी को बाँधा तो वह भाप बनकर ऊपर उठ गया
तभी भाप को मेघ ने अपने गर्भ में समा लिया
मेघ का हृदय चीरकर पानी धरती पर बरसा
तो पृथ्वी के कण कण ने उसको अपने में रमा लिया
और बांध बनाकर मानव ने फिर उसे जमा किया
पानी की लहरों ने दीवारों से टकराकर व उछलकर
करी करुणा की पुकार
तो पास खड़े दर्शक ने कहा
तरल प्रकृति के आसानी से किसी ओर बहने वालों पर
नियन्त्रण करना तो सदा ही रहा दुनिया का व्यवहार ★

卐 तेरी आवश्यकता प्रत्येक को रहती
सर्दी गर्मी वर्षा सदाकाल तेरी सेवा है अमर
दूध दही मधु को स्थान देता तेरा ही उदर
फिर भी लोग तुझे घट घट कह कर पुकारते हैं क्यों ?
तो घट ने कहा मैं तो डटा हूँ अपने कर्तव्य पर
और सभी लोग घट कहकर भी रखते हैं मुझे सर पर। ★

卐 नमक की खान अथवा पहाड़ियों के पास जमीन
वहुत सी पड़ी रहती खाली
पर उसमें कभी नहीं लहलहाती हरियाली
खार की जमीन में वीज का होता सत्यानाश
और जिसके हृदय में कड़वाहट है
उसका कभी नहीं हो सका विकास। ★

卐 बरसात अभी हुई नहीं पर किसान
खेत की जमीन को खोद कर कर रहा तैयार
क्योंकि सख्त जमीन में वोया हुआ
वीज कभी पनप नहीं सकता
न कभी हो सकता उसका विस्तार।★

卐 जीवन में मैंने तो कभी देखी न हार
न मार खाई न किया प्रहार
क्योंकि विजेता वनने की कभी रही न चाह
सत्ता अर्थ वैभव की कभी की न परवाह
जीतने के योग्य मुझे कुछ लगा हो नही
इसलिये मुझे संघर्ष करना पड़ा ही नहीं
मैं तटस्थ खड़ा रहकर देखता रहा संसार
और इसी में मिल गया मुझे आनन्द और प्यार
मेरे मन में कभी घुस ही नहीं पाया संसार
इसलिये मैंने न विजय पाई न हार। ★

卐 एक व्यक्ति और दूसरे के बीच
समझौते का नाम है जाति देश समाज
पर दोनों ही गल्ती पर होते हैं
और इसी में छिपा है प्रगति का राज
जिसमें अपने अपराधों को देख कर
दूसरे के अपराधों पर कर न सकें नाज। ★

卐 हृदय में यदि साहस वेग और उत्साह है
तो उसका सम्यक् विकास करें, विनाश नहीं
और यदि उसमें उभरते गहरे भाव हैं
तो उसका जागरुक बन दर्शन करें दमन नहीं
क्रोध अहं मोह माया, सारी, हृदय की वृतियों ही तो हैं
इनकी भूलकर भी मत कर देना घात
वल्कि रुपान्तरित करके साहस स्वाभिमान प्रेम
व विवेक में बदल डालो
तो उसी क्षण उदय होगा जीवन में नव प्रभात।★

卐 किसी मन्दिर मस्जिद गिरजे के भीतर
या किसी सन्त महात्मा के पास
हम सत्य खोजने जायें तो होंगे निराश
क्योंकि सत्य यदि वहाँ है तो अवश्य होगा
अपना घर भी उसका आवास
जैसे सुखद समीर व उज्जवल प्रकाश का
अस्तित्व है तो है सभी जगह उसका निवास।★

卐 मैं यह तो नहीं मानता कि तुम्हारे सारे तर्क निस्सार
और यह मानता हूं कि तुम जो मुझे समझा रहे हो
वह भी हो सकता है सच
पर उसमें भी कुछ सत्य तो अवश्य ही जायगा बच
क्योंकि परमात्मा के सिवाय हम सभी हैं अपूर्ण
और इसलिये तुम्हारे तर्क भी हो सकते नहीं पूर्ण
अनंत और विस्तीर्ण सत्य को छू लेना है नहीं आसान
और इसलिये जो सत्य तुमने पाया उसे पूरा
न लेना मान। ★

卐 व्यक्ति में धर्म पलता है और भीड़ में पलता है पाप
व्यक्ति का संक्रमण भीड़ में होने पर लुप्त
होता व्यक्ति आप
इसलिये धर्म व्यक्ति को भी उससे हटाना चाहता
भीड़ के उपद्रव से वाहर कर उसका प्रभाव मिटाना चाहता
पर धर्म के नाम पर भी भीड़ हो जाती कहीं
तो निश्चित है धर्म वहाँ फिर रहता ही नहीं
अपने व्यक्तित्व से विलग कर दिया संसार
वहीं पा लेगा धर्म, उतर जायेगा पार। ★

卐 पौधे के सारे फूल माली ने चुनकर
उसकी सारी सम्पदा ली लूट
पर पौधा शान्त और अविचल खड़ा अपने को लुटाता रहा
और दूसरे दिन उसमें उतनी ही कलियां फिर गईं फूट
तव लगा कि अपने आनन्द को जो
अपने में सिमट कर रखता है वन्द
उससे वे नर सदा उत्तम हैं जो
खुल कर लुटाते सवको सदा अपना आनन्द। ★

卐 महत्वाकांक्षा के विष ने युगों से
हमारे जीवन में प्रवेश कर किया उसका नाश
स्वार्थ शोषण संघर्ष से भरा
आदि से अन्त तक उसका इतिहास
पर छोड़ कर संकल्प
जिस दिन किया समर्पण स्वीकार
उसी क्षण मृत्यंजय बन गया जीवन
प्रवाहित हो गई उसमें अमृत की धार।★

卐 लौ ने तेल जलाकर, जलादी बाती
फिर स्वयं जलकर पा गई शून्य में विस्तार
व्यक्ति ने प्रमाद छोड़ा, छोड़े विचार
फिर स्वयं को छोड़कर हो गया जगत के पार
विचार और अहंकार के जब तक चलते थे भँवर
चेतना भटक कर निरन्तर खा रही चक्कर
और निर्विचार निरहंकार हुआ कि शान्त हो गया मन
केवल रह गई चेतना मुखरित हो उठा जीवन। ★

卐 हाथ पैर नाक कान आँख मुँह सभी स्थान
अलग अलग कर रख दें सभी एक एक अंग
पर प्राण चेतना कहीं दिख न सकेगी
क्योंकि उसका तो है न कोई रूप और रंग
पर जहाँ सभी के विलग करने पर
शून्य बच जाता है
उसी में चेतना निखर उठेगी
और जड़ता के सारे साज हो जावेंगे भंग। ★

卐 संसार के दुःखों से भागना तुमको किसने सिखाया
जो भागा उसने भी तो पार नहीं पाया
भीड़ में रहकर भी निकाल दी जिसने मन की भीड़
अन्दर का संसार शान्त हुआ तो मिट गई सारी पीड़
परम दयालु सृष्टा की सृष्टि में कभी दुख था ही नहीं
किन्तु विकार और विचार के फेर में फँसे हुये
मनुष्य की दृष्टि में कभी सुख रहा ही नहीं। ★

卐 जहाँ विचार समाप्त होते हैं प्रारम्भ होता ज्ञान
क्योंकि विषय विकारों का जहाँ रहता है वास
धन सम्पत्ति वैभव की तृष्णा और आशा
वहीं विचार और विकार का चलता है प्रवाह
पर जबसे मैंने छोड़ी इन सबकी चाह
मन निरपेक्ष होकर बन गया बेपरवाह
तो प्रकट हुआ केवल ज्ञान, मैं बन गया भगवान। ☀

卐 कर्तव्य किया न रखी फल की आश
सुख में प्रसन्नता हुई न हुआ दुख में निराश
तन के कष्टों का चैतन्य पर हुआ न असर
हर स्थिति में स्वस्थ हो किया अपने में बसर
कर्मों में अनासक्त बन बढ़ गये चरण
प्रभुता स्वयं उसका करती वरण
इसे जग कहता हो गया कल्याण,
और मैं कहता उसे हो गया निर्वाण। ☀

卐 वस्तुओं को जो केवल मानता है तथ्य
साधन है साध्य नहीं जो जानता यह सत्य
वस्तुओं में आरोपित नहीं करता अपना पन
मूर्च्छा को छोड़ जो करता विसर्जन
बाहर का संग्रह था तब अंतर था खाली
बाहर खाली बना कि भीतर की सत्ता पालीं। ★

卐 मंगलमय उत्तम जो हैं मैं ले रहा उनकी शरण
सब कुछ त्याग कर जिन्होंने कर लिया स्व का वरण
और स्व में जिन्होंने सर्वस्व पा लिया
व स्व की साधना में अपना मन रमा लिया
उनके अनुभव प्रकाश भरे उनके वचन
प्रेरणा बन जाय, निखरे मेरा जीवन धन। ★

卐 इच्छाओं को जो निरन्तर जन्म देता है
और फल की आंकाक्षा करता है
वहाँ चलता है समय का प्रवाह
और व जहाँ समर्पण भाव जागृत होकर
हर वस्तु को स्वीकारा जाता है
वहाँ समय को गति रुक जाती है
और प्रकट हो जाता है केवल आनन्द अथाह। ★

卐 दूसरों में वही आनन्द ढूँढ़ता है जो
पाता है अपने में अभाव
और दूसरों में खोजना ही पैदा करता है हिंसा के भाव
और इस खोज की गहरी खाई में नीचा
वहता हिंसा का बहाव
जो भाव को विभाव बनाकर करता विस्फोट
पर जहाँ दूसरा मिटा कि विभाव ही बन गया स्वभाव
भाप बनकर ऊँचाइयों में उसने ले ली ओट
तब दिया अहिंसा भगवती ने अमृत का घट
जीवन वीणा का मधुर गान हो गया प्रकट। ★

卐 नारियल का खोखा और गिरी जब तक चिपके रहे
एक को तोड़ा तो दूसरा भी गया टूट
पक गये साथ छोड़ा और खोखे को तोड़ा
अन्दर के पूरे नारियल का खोखे से गया साथ छूट
इसी तरह चेतन तन में आसक्त होकर बना एक
तन के कष्ट उसे भी उठाने पड़े अनेक
पर जब से चेतन तन से जुदा होकर हो गया विमुख
तन के कष्ट का उसे हुआ किंचित न दुख। ✶

卐 कुछ वस्तुओं के बीच आप कर सकते है चुनाव
जबकि उनके अनुकुल प्रतिकूल बहते है भाव
पर चुनाव न करने की स्वतंत्रता
कभी किसी ने नहीं पाई
और इसलिये वस्तुओं की भटकन में ही
चेतना सदा लहराई। ✶

卐 वर्षों की उत्कट साधना में गुरु रहते थे तल्लीन
सेवा में रहता था नवदीक्षित शिष्य एक प्रवीन
एक दिन देवदूत ने आकर कहा
तीन जन्म में होगा गुरु आपका कल्याण
हो गए निराशा, मान ली हार कि बुझ गये अरमान
शिष्य को बताया तीन बरगद के पत्तों जितने जन्म
में हो जायगा तुम्हारे कर्मो का अन्त
वह नाच उठा धरप्पार, और विजय के विश्वास में
खुल गया उस के मोक्ष का द्वार। ✶

卐 पुष्प खिले, रस फूटा, पत्ते लहराये फैली बहार
भ्रमर डोले तितलियें मंडराई
कोमलांगियो ने संजाये श्रृंगार
पर ज्योंहि सुमन मुरझाए, सूख गया रस
तिल्ली, भ्रमर, दर्शकों ने किया किनारा खा कर तरस
पुरुष और प्रकृति ने पुष्प से नाता दिया तोड़
संपत्ति के साथी जाते विपत्ति में छोड़। ✶

卐 अविरल गति की सरिता, दूर चलकर भी सागर में
जाती है मिल
अवरुद्ध गति की ताल, चक्कर खाकर सूख जाता
सड़ कर पाता तल
निश्चित मार्ग से चलने वाला पा जाता मंजिल
और समझौता करने वाला रहता ढ़िलमिल
दर्शन और विचार ही बनते समझौते का आधार
पर जिसने मार्ग से समझौता किया वह उतरा न पार। ★

卐 अन्धे को कहा कितना तेजस्वी है सूर्य
जिसका समुज्जवल प्रकाश
पर उसने कहा यह है असत्य, उसे होता न आभास
उपचार कर उसके आँखों में ज्योति लादी
तो वह नाच उठा और बिना समझाये उसने
प्रकाश को जान लिया सही। ★

卐 आँखों में सुरमा डालते ही
आँसू बरस पड़े तड़ातड़
और मन में विराग छाते ही
छूट जाती स्वयंजग की जकड़। ★

卐 त्याग का त्याग ही तो है त्याग
पर त्याग का अभिमान बन जाता राग
इसलिये त्याग को याद रखने वाला भी
कभी न सकेगा जाग। ★

卐 सात समुद्र पार के देश, नदी पहाड़ धरातल वन
उनकी भाषा संस्कृति वेश, व्यवस्थाएँ जीवन
को हमने लिया अच्छी तरह जान
पर हमारे प्राण-भाव-बुद्धि कहाँ बसते हैं
कहाँ है नाभि हृदय और मन का स्थान
इससे हमारी हुई नहीं पहचान
अपने गंतव्य, दीवारों को जान नहीं पाए
केन्द्र से रहे दूर, केवल परिधि के चक्कर खाए
पागल यात्री की तरह हमको गंतव्य का
पता लगता नहीं
जो क्यो कैसे कहाँ जी रहे है? इसको बता सकता नहीं। ★

卐 पंडित को सूचना व स्मृति से मिला ज्ञान
है फोटोग्राफ की तरह, जिसमें दिखता
एक सा चेहरा एक सा समाधान
पर ज्ञानी की अनुभूतियों के सचेतन प्रवाह का दर्पण
दिखलाता बदलते चेहरे क्षण क्षण
इसीलिये पंडित का उत्तर एक सा रहता सदा जड़
और प्रज्ञाशील के उत्तर में होती नहीं कभी पकड़। ★

卐 सारे महापुरुष ज्योति प्रकट कर दिखा गए प्रकाश
ज्योति बुझने पर रह गई लीक और सुवास
हम बुझे ज्योति को मानते भगवान
उसी की पूजा कर दे रहे सम्मान
पर सच तो यह है वहां केवल अन्धेरा पाएँगे
जड़ता की चट्टान से ठोकर ही खाएँगे
ज्योति के अनुभव से जो ज्योति जगाएगा
उसी क्षण व्यक्ति स्वयं प्रभु बन जाएगा। ★

卐 महापुरुषों के बताए मार्गों से लक्ष्य की ओर
बढने वालों को समझें अन्वेषकों का मिलन स्थल
जिसका आधार हो प्रेम और आनन्द ही फल
पर यदि मार्ग की पूजा की देकर श्रद्धा सत्कार
और प्रेरणा व जिज्ञासा पाकर यात्रा को हुए न तैयार
तो हम चौराहों पर ही अटक जाएगें
मार्ग मिलेगा न मँजिल, बीच में ही भटक जाएगें। ★

卐 काम एक शक्ति है जिसमें अपूर्व वेग और असीम वल
उसे खंडित करने या दवाने का प्रयास
सदा ही रहता है निष्फल
दूसरों को पराजित करने को कहा यदि हिंसा
तो अपने को सताना कैसे होगी अहिंसा
संघर्ष और जय पराजय के भाव
स्वयं हो या पराया, निश्चित छोड़ेंगे घाव
तटस्थ वनकर काम को करलें स्वीकार
और जागृत करें स्वभाव
अजेय वना देगा उर्ध्वमुखी काम का बहाव। ☆

卐 धन कभी नहीं भर सकता आत्मा का खालीपन
हम धन का वांधते हैं और धन वांध लेता है मन
सारे विश्व का धन भी भर न सकेगा समग्र जीवन
यह समझ लिया और दूर हो गया उससे लगाव
मूर्च्छा हटी कि जागा निस्पृहता का भाव
फिर धन छोड़ें या न छोड़ें वह स्वयं कर लेगा किनारा
विखर जायगा वैभव होकर वेसहारा
स्वमिट कर वन जागया सर्वस्व
मुखरित हो जायगा उसमें चेतना का वर्चस्व। ★

卐 भवन नहीं है वार, छज्जा, अटारी, मीनार
क्योंकि उसमें होता नहीं आवास
रहने को चाहिये शून्य अवकाश
दरवाजे से प्रवेश होता जहाँ कुछ भी नहीं
अतः खाली में होता प्रवेश व पाते निवास
और वही है केवल काम का भवन
इच्छाओं से रहित स्थान में बसता जीवन। ★

卐 मैं बैठा देख रहा था बेडमिंटन का खेल
जिसमें बल्ले की मार से शटल हो रही थी बेहाल
तो लगा भावों के झपाटे से चेतना
की बिगड़ जाती चाल
वरना स्वयं में शटल है हल्की, श्वेत, सुन्दर
और भाव शून्य चेतना है प्रभो का स्वच्छ मन्दिर। ★

卐 उत्साह रहे पर, सावधान
आप तेजी से आगे बढ़ें पर लहराऐं नहीं
किसी से टकराऐं नहीं, स्वयं चोट खायें नहीं
बन जाय न कभी अनियन्त्रित यह मन
और गन्तव्य पर जाकर विहंस उठे जीवन । ★

卐 संसार असार दुखमय नाशवान
ऐसा मानकर इससे जो जाता है भाग
वह साधु पाल रहा है निपट अज्ञान
पर जिसने सचमुच ही किया त्याग
इसलिये कि एकान्त में निर्विघ्नरूप से
संसार का सम्पूर्ण आनन्द ले सकें
वही प्रभु बन सकता है महा भाग । ★

卐 दमन पूर्वक त्याग और स्वच्छेद भोग
दोनों को मैं तो मानता हूँ रोग
एक ने अपनी इच्छाओं को अपने में दबाया
दूसरे ने निकालने का साधन खोजा पराया
दोनों से श्रेयकर है जागरण
जिसमें इच्छाऐं विसर्जित होकर होती शून्य में विलीन
और रहती नहीं अपने या पराए अधीन। ★

卐 इस द्वार के पीछे बराबर वाले कमरे में
ताला बन्द जड़ा हुआ स्वर्ग का द्वार
पहले सोचा मैंने कुजीं खोदी
पर बाद में ध्यान आया कि
कुजीं तो मैंने स्वयं फेंक दी उस पार। ★

卐 घर कहता मुझको मत छोड़ो
तेरा अतीत का यही वास
और मार्ग पुकार का बँधा रहा आश
कहता पीछे चलते रहो
मैं हूँ तेरा उज्जवल इतिहास
पर मैं न तो अतीत में और न भविष्य में
केवल हूँ वर्तमान क्षणों की साँस। ★

卐 हम सब भिक्षा का पात्र लेकर ही
मन्दिर पर जाते प्रभो के द्वार
और पूजा की सामग्री के साथ
लग जाता हमारी याचनाओं का अम्बार
कोई चाहता स्वथ्य तन, कोई वैभव सम्पदा बंधन
कोई भरना चाहता मन कोई सुखी चाहता जीवन
भिखारी को कब कोई दे सका सम्मान
इसलिये हम को खाली हाथ आना पड़ता
नहीं मिल पाते भगवान्। ★

卐 मेरे दिव्य प्रसाद की खिड़की के नीचे
सड़क के दाहिनी ओर सिमट कर साध्वी जाती थी
और बांई ओर पसर कर जा रही वैश्या मदमाती थी
तो मैंने सोचा
कितना पवित्र वंदनीय साध्वी का जीवन
और कितना घृणित अपावन वैश्या का तन
तभी मेरा अन्तहृदय बोल उठा
एक प्रभो को खोज रही है करके याचना
दूसरी है खोजती सह करके यातना
एक पूज्यनीय दूसरी दयनीय
पर दोनों की आत्मा है एक सी ही कमनीय। ★

卐 एकाकी द्वीप पर कुछ सन्यासी खुले
आकाश के नीचे रह कर
कहते थे प्रभू हम जी रहे तेरी दया पर
एक दिन शहर से विद्वान धर्माचार्य आए
उन्हें सुन्दर सरस संगीत भरे भजन सुनाए
जब वह वापस जा रहा था शहर
तो देखा वे ही सन्यासी आ रहे उड़कर
आकर पड़े पैर में कहा "भूल गए भजन फिर सुनाओ"
धर्माचार्य ने चकित हो उनकी उपलब्धि पर
कहा "तुम तो पुरानी प्रार्थना ही गाओ।" ★

卐 छैनी और हथोड़ी लेकर पत्थर तराश रहा था मूर्तिकार
मैंने पूछा "आप नया तो कुछ भी नहीं करते तैयार
फिर मूर्ति बनेगी कैसे ?
तो वह हँस कर बोला "मूर्ति बनाई नहीं जाती
वह तो छिपी हुई है पत्थर के अन्दर
व्यर्थ का पत्थर तोड़ कर अनावृत किया
कि प्रकट हो जायेगी प्रतिमा सलोनी सुन्दर"
और इसी तरह चेतन के ऊपर की परतें उतर जाती हैं
तो प्रकट हो जाता स्वयं भगवान
सुवासित जिससे हो रहा है मन मन्दिर। ★

卐 एक धर्माचार्य ने सड़क पर झाड़ू फेरते हरिजन से कहा
"कितना गन्दा और घृणित है तुम्हारा काम
कर्मों की विचित्र लीला कैसी हाय राम"
हरिजन ने पूछा क्या करते हैं आप ?
गर्वित गुरु बोले "मैं बांटता हूँ पुण्य और छांटता हूँ पाप"
हरिजन ने फिर झाड़ू फेरते मुस्करा कर कहा
"हाय राम भले मनुष्य को क्यों कर दिया बेकाम ?" ★

卐 हमने महात्माजी के दर्शन किए तो उन्होंने कहा
"लाखों की सम्पदा का किया उन्होंने त्याग
घर वार परिवार पुत्र पुत्री छोड हो गये वेलाग"
पूछा "कव हुआ ? तो कहा हो गये पचास साल"
आश्चर्य हुआ कि निस्सार धूल समझ छोड़ा
उसका कैसे रहता है निरन्तर ख्याल
त्याग में और भोग में वैभव का मोह तो छूटा ही नहीं
आत्मा का आनन्द फूटे कहाँ से अहं का पाषाण
तो टूटा ही नहीं। ★

卐 एक कट्टर पंथी उपदेशक
छिछले हृदय का है निपट वहरा
जो दूसरों के विचार सुन नहीं सकता
न उतार सकता गहरा। ★

卐 अपने तक सीमित रखना संतोष की बात
प्रकृति सुन न ले उसे, जो जगती दिन रात
क्योंकि उसने सुन कर मान लिया
तो सरिता सागर तक जायगी नहीं
शीत ऋतु से वसंत फिर आयगी नहीं
चलते सांसों की गति रुक गई
तो जीवन में चेतना लहरायगी नहीं। ★

卐 संसार का आनन्द चाहते हो
या परलोक की शाँति ?
प्रश्न पूछा गया जब लेकर मेरा नाम
तो मैंने कहा मुझे है दोनों से काम
क्योंकि एक है महा प्रभू के काव्य का अनुप्रास अलंकार
और दूसरा है उसका पूर्ण विराम। ★

卐 मुझे तो संशय है आप बुद्धिमान् हो
क्योंकि बुद्धि का अहं आपको रोने नहीं देता
बुद्धि का संग्रह आपको सोने नहीं देता
बुद्धि का भ्रम कुछ होने नहीं देता
उसके गांभीर्य में हँसना गँवाया
स्वार्थी बन कर किसी का प्यार नहीं पाया
मेरा तो विश्वास है आप किसी नशे में बेभान हो। ★

卐 क्रोध करके किया हमने पश्चाताप
उससे तो बच गये पर मिटा नहीं अन्दर का अनुताप
अपनी प्रतिमा को उज्जवल करने में हो गये सफल
पर किंचित न सका उससे अपना हृदय बदल
अन्तर्मन को रुपान्तिरत करने में है प्रायश्चितकासार
पश्चाताप तो केवल बाहर की प्रतिमा देता संवार। ★

卐 समय की बहती धारा को हम रोकना चाहते हैं
जीवन के क्रम को स्थगित कर हम टोकना चाहते हैं
रोकने और टोकने में खपा देते हैं हम अपना बल
और मृत्यु के समय पाते हैं कि हम हो गये असफल
क्रोध करें आज, ध्यान करें कल
धर्म को स्थगित कर रहे, अधर्म में पल
जीवन गँवाया, सारा कल की चाह में
मिट गये सारे काल के प्रवाह में। ★

卐 मैं स्वयं ही हूँ चिनगारी
और स्वयं घास फूस का ढेर
मेरा ही एक भाग दूसरे को
जला देगा देर सवेर
मैं स्वयं ही हूँ यात्री स्वयं मांझी बलवान
हर रोज लेता मैं खोज
नया प्रदेश अपनी आत्मा को छान
मेरा एक हृदय दूसरे के दुख से
घायल होकर कर रहा रक्त पान
और दूसरा हृदय उससे द्रवित होकर
दे रहा क्षमादान
चेतन की साधना का बन रहा तन द्वार
तन मिटकर चेतना हो जायगी साकार। ★

卐 अपने को जानने का सीधा मार्ग है उसका ध्यान
जिसमें कुछ भी करना नहीं पड़ता
केवल करनी होती है शून्य से पहचान
शून्य हो जाय अंह शून्य हो विचार
समय शून्य होते ही प्रकट हो जाता चेतन निराकार। ★

卐 जब मैंने अपने से ही पूछा 'मैं कौन'
तो उत्तर मिला कि मैं न तो हूँ सुन्दर तन
न कुशाग्र वुद्धि और न चंचल मन
कार्यरत इन्द्रियों में भी कुछ नहीं है मेरा
तभी टूट गया सब आवरणों का घेरा
तन के भीतर बुद्धि हो गई स्थिर मन हो गया मौन
मैं मिट गया तब उत्तर मिल गया 'मैं कौन'। ★

卐 हजारों लाखों व्यक्ति हैं तेरे अधीन
पर तुमसा दिखा न गुलाम और दीन
क्योंकि उनके बिना स्वामी कहेगा कोन
और यदि तुम किसी के अधीन हो
तो तुम्हारा व्यक्तित्व रुक कर हो गया है मौन
न अधीन हुये न किया किसी को अधीन
एकाकी बन वहीं नर हो गया प्रभू में लीन। ★

卐 मन में भरे रहते विचार कर्म अनुभव संस्कार
अतीत से उसका जुड़ा रहता तार
योनि की परिधियों है उसके खेल
बाह्य कामनाओं से रखती जो मेल
और जब व्यक्ति मन और तन को कर लेता पार
अंतर में छिपे का पा लेता सार
बन जाता सिद्ध बुद्ध, मिट जाता संसार ★

卐 मन विचारों का पुलिंदा है, है संकल्प विकल्पों का जाल
जो मारने से मरता नहीं और दवाने से दबता नहीं
पर उससे जव दूर होकर देखने लगा
तो वह शांत हो गया और उसकी रुक गई चाल
होश नहीं था तव तक तो करता था उपद्रव और रोष
पर होश में आते ही हो गया चेतन में तल्लीन
शांत वन गया और हो गया ब्रह्मलीन। ★

卐 जव तक यह जाना कि सुख और दुख
औरों से मिलता है
तव तक हम सदा रहे परतंत्र और दीन
पर जव यह जाना कि सुख भी मेरा दुख भी मेरा
उसी क्षण व्यक्तित्व हो गया स्वामी स्वाधीन
सव कुछ पीछे से भीतर से आकर, वाहर पा रहा विस्तार
इस नाटक के लेखक, पात्र दर्शक हम रहे सदा से
यह जान लिया तो अनंत शून्य पर हो गया
चेतना का अधिकार। ★

卐 अविरल वर्षा की धार से चोटियें तो रह जाती रीती
और घाटियों तर होकर जाती भर
घट में समाएगा उतना
जितना खाली है उसका उदर
इसी तरह कामना रहित होगा मन का जितना अवकाश
गहन चेतना व्यापक बनकर करेगी वहीं पर निवास। ★

卐 अर्थ, सत्ता, यश, वैभव के चाह की
को जिसने अपेक्षा तो दुख हो पाया
और जो इनसे रहा बेपरवाह
और की उपेक्षा तो आनन्द हाथ आया
चाह करने पर कभी कुछ मिलता ही नहीं
अनचाहे सभी कुछ खिलता सही
सुख दुख की सीमा का चिन्ह भी यही। ★

卐 अंतप्रेरणा और सौन्दर्य के गीत कहीं गाये
घनी बस्ती हो या एकांकी स्थान
सुनने वाले मिल ही जायेगें देकर स्नेह व सम्मान
क्योंकि ऐसे गीत केवल गाये ही जाते है
और उन पर झूम उठता है जन जन
उनकी व्याख्या की ही नहीं जा सकती
जिस पर करते हैं केवल चिंतक मनन। ★

卐 असत्य को मनाने के लिये
तर्क का सहारा लेकर निश्चित भाषा को कहा प्रमाण
आग्रह भरे शब्दों में आबद्ध कर दिया ज्ञान
पर सत्य सदा रहा अप्रतिबद्ध और अनन्त
अनिश्चय की भाषा है उसका आदि और अन्त
हर वस्तु किसी अपेक्षा से है और किसी से नहीं
सत्य की खोज का है यह रास्ता सही। ★

卐 सन्यास है जीने की कला और पूर्णता का अनुभव
जिसमें स्वतः हो जाता प्रेम का उद्भव
सन्यासी को छोड़ना नहीं पड़ता घर बार परिवार
क्योंकि उसके लिये अमृतमय है सारा संसार
वह तो स्वनिर्भर होकर चल पड़ता है अभय की राह
मौत भी वन जाती है जब जीवन की चाह
जीवन के सुन्दर तय अध्याय का हो जाय मौत
पूर्ण विराम
सन्यास का केवल यही है काम । ✶

卐 समाज अतीत सुविधा और औपचारिकता
पर ध्यान रख कर करता नीति निर्माण
वहाँ हमारे चरित्र की धारणाये वन जाती प्रधान
उसी को उपदेश देने वाले को लेते हम सद्गुरु मान
पर सच्चा सद्गुरु धारणाओं को तोड़कर पहुँचाता उनके पार
सामायिक सत्यों का छोड़कर
सनातव मत्य से जोड़ लेता तार
और ऐसे सद्गुरु से हम रहते अनजान
जीवन बीत जाता मिलता नहीं समाधान । ✶

卐 आया था अनाम और जाऊंगा अनाम
विचित्र संयोग था कि बिना पूछे किसी
ने दे दिया मेरा नाम
और उसी को लेकर मैंने अपने सारे किये काम
संचलित हूई उसी से मेरी प्रवृतियों तमाम
में जो था ही नहीं उसे मैंने समझ लिया अपना
और उसे फिर छोड़ना पड़ा जैसे रात का सपना
अपने को मैं कभी जान ही नहीं पाया
और जो न था, उसी में, अपने को गँवाया। ★

卐 हर पूजा और उपसाना गृह के अन्दर
पाते हम प्रभो के रजकण सुन्दर
और बाहर आकर उन्ही पर लड़ते झगड़ते
आपस मे करके ईर्ष्या और रोष
तब प्रभो के रजकण वापस लौट जाते
तो इससे हमारा अपना ही है दोष। ★

卐 भलाई और बुराई के बीच की सीमा
को जिसने लिया जान
और दोनों को अलग करने की रेखा पर
अगंली रख सकता जो इन्सान
उसे ही मिल सकते है परम दयालु भगवान ★

卐 जो व्यक्ति मूर्च्छा को त्याग
सदा सर्वदा जगता रहता है
अवरुद्ध न होकर, रहता गतिमान
अपेक्षा छोड़ उपेक्षा पर रखता है ध्यान
विवेक और साहस से जिसको चरण चला
निश्चित ही उसे अपनी मंजिल मिला। ★

卐 संकल्प की साधना में 'तू' खो गया
समर्पण की साधना में 'मैं' सो गया
तू में में व मैं में तू स्वयं हो गये लीन
परम शून्य या परम मुक्ति के विपरीत मार्गों से
पहुँच कर दोनों हो गये स्वाधीन । ★

卐 सूर्योदय के साथ जीवन पाता विस्तार
संध्या में सिमट जाती जीवन की धार
एक प्रेरणा काम की और दूसरा विश्राम
तन के विश्राम में जाग जाता काम
मन के विश्राम में प्रगट होता राम
और मुक्ति है काम से राम की प्रक्रिया तमाम । ★

卐 धर्म और मृत्यु एक ही प्रक्रिया के हैं दो नाम
जिसने मृत्यु का अनुभव नहीं किया
वहां तक रहता केवल अर्थ और काम
और उसका प्रत्यक्ष अनुभव करते ही
उत्पन्न हो जाता धर्म जिसका मुक्ति है धाम ★

卐 मृत्यु के चेतन बनते ही जन्मता धर्म तदर्थ
वह निश्चित है, यह जाना कि बदला जीवन का अर्थ
उसकी दृष्टि में जीवन की सारी क्षुद्रताएं लगती हैं व्यर्थ
चरण ठिठक जाते रुक जाता सारा ही अनर्थ। ★

卐 मरते समय पीडा और दुख के दर्द भरे घाव
की सृजक मौत नहीं है, पर है भविष्य
समाप्त होने का भाव
जीवन की लालसा का भविष्य है आधार
स्थगन की प्रक्रिया में, जन्मता पाप, पलता संसार
जीवेषणा समाप्त हुई कि मिट गया विषाद
पूर्ण तृप्ति में तन मन डूब कर पा गये आलहाद
उसी क्षण मौत में उभर आता विहँसता जीवन
उल्लसित हो उठता जिसमें चेतना का कण कण। ★

卐 धर्म सीधा सरल रास्ता है
सहज आनन्द का जहाँ खुल जाता है द्वार
मिट जाता अहंकार
मोह माया का सूख जाता रस
प्रज्ञा से प्लावित जीवन बन जाता मधुर और सरस
तभी धर्म को घेरे लेते हैं कर्म
लोकेषणा में रस लेने को आतुर धर्म वन जाते अधर्म
और अधर्म में खो जाती आत्मा अमूल्य
वाहर पाने में भीतर का सोने का देना पड़ता मूल्य। ★

卐 शक्ति और सामर्थ्य सदा रहते तटस्थ
उसका अपना है न कोई हेतु न कोई गति
व्यक्ति ने उसको दूसरे की ओर गति देकर
नीचे बहाया तो बन गया मौन
और स्वयं की तरफ गति देकर उपर उठाया
तो सारा उपद्रव हो गया मौन
पानी बर्फ बनकर ठस गया सिमट गया आकार
भाप बनकर चढ़ गया पा लिया विस्तार
अधर्म है बाहर को और उर्जा बहाव
धर्म है अन्तर में झांकने का व्यक्तिगत स्वभाव । ★

卐 चारों ओर था अज्ञान का अन्धकार
क्रोध मान मायालोभ कर रहे थे प्रहार
रागद्वेष की जंजीरों में बंधा
आसक्ति के दल दल में फँसा
वासना के अजगर कर रहे थे फुफकार
तभी मैंने जागृत हो अन्दर झांका बनकर अविचल
कि अचानक सारी ही परिस्थितियां गई बदल
असंगता और अभय का मिल गया वरदान
एक ही क्षण में हो मैं गया भगवान् ★

卐 आत्मा और परमात्मा के बारे में सब कुछ लिया जान
तो भी मिला नही समाधान
क्योंकि ये वस्तुए जानने की नहीं होने की है
अपने में रमण करे उसके सारे विभाव खोने की है
अपना समझा वो था पदार्थ पराया
उसे खोया तो सभी कुछ पाया
ज्ञान विज्ञान के संग्रह को जिसने मिटाया
वही बन गया प्रभु जिसने स्वयं को जगाया। ★

卐 अन्धकार ने भगवान् से कहा
सूर्य मेरा अन्नत काल से कर रहा सर्वनाश
छुटकारा दिला दो प्रभो आया ले न्याय की आश
तभी भगवान् ने सूर्य को बुलाया
व उपालय देकर कहा गलत है यह बात
सूर्य ने कहा प्रभो अन्धेरा मुझे दिखादें साक्षात
प्रभो ने अन्धकार को उसके सामने बार बार बुलाया
पर वह कभी नहीं आया
युगों युगों का अन्धकार मिट जाता है
जब प्रकट होती प्रकाश की किरण
और अन्नत जन्मो के विषय विकार मिट जाते हैं
जब जागृत हो जाता हमारा अन्तर्मन। ★

卐 मधुमक्खी के छेड़े गए छत्ते की भाँति
विचारों के विषाक्त डंकी से ग्रसित यह मन
विचार शून्य हो जाय तो झील की तरह
शांत निर्विघ्न बन जाये जीवन
दर्पण की तरह बन जाय निर्मल
और अमृत झरने लग जाय उसमें पल पल ★

卐 हमारा बड़ा है विचित्र व्यवहार जड़ता पाती प्यारा
चेतन खाता मार
जिसने गाया जीवन संगान उस पर छोड़ा तीर कमान
आत्मा की वेदना सुनने जिसने खोले कान
उस पर कीलें जड़ दी तान
प्रेम का पाठ पढ़ाया उसे फाँसी पर चढ़ाया
अहिंसा को किया साकार उसको हमने दी गोली मार
जिये जब तक किए प्रहार
और मरे तो जड़ प्रतिमा पर चढ़ाये ढेरों उपहार। ★

卐 वैश्या और ऋषि आमने सामने रह कर
देखते थे एक दूसरे का जीवन
वैश्यों के सुखों में लालायित रहा ऋषि का जीवन
और ऋषि के पवित्र जीवन को देख
नित करता वैश्या का मन
दोनों का एक साथ हुआ अवसान
वैश्या गई स्वर्ग और ऋषि ने पाया नरक स्थान
ऋषि की आत्मा झुँझला कर बोली क्या
भूल गया भगवान ?
कि देववाणी हुई कि आत्मा और शरीर
पा रहे थे अपना फल
पवित्र आत्मा के लिये खुला स्वर्ग का द्वारा
और पवित्र तन का भूतल में हो रहा जय जय कार। ★

卐 आप में या तो हिलोरें खाएगी जवानी
या फिर आप रह जायेंगे केवल ज्ञानी
यौवन के आनन्द में कब मिला है जानने का अवकाश
और ज्ञानी ने ज्ञान की खोज में छोड़ दी जीवन की आश
इसलिये दोनों साथ रह नहीं सकते
या तो छायेगी उदासी या फिर आयेगी नादानी। ★

卐 चेतन तन के संशर्प की कल्पनाओं के सीन
उन्हीं लोगों के हृदय में बसते हैं
जिसकी आत्मा रुग्ण होकर सो रही है
और जिनका शरीर हो रहा ताल स्वर हीन । ★

卐 सुन्दरतम वस्त्र जिसने पहनाए
इष्ट मिष्ट भोजन जिसने खिलाए
प्यार भरे सलोने बिस्तर बिछाए वे सब थे पराये हाथ
फिर क्यों रहना चाहते हो एकाँकी
छोड़ कर ऐसा सुखद साथ । ★

卐 मेरे पास आते हैं देव और शैतान
छुटकारा पाना है उनसे आसान
पुरानी प्रार्थना पढ़ने लग जाता हूँ
उकता कर भाग जाते स्वयं ही देव
और करने लगता पाप पुराना
तो पास से ही गुजर जाता शैतान स्वयंमेव । ★

卐 त्याग और भोग का है एक ही विन्दू एक ही क्षण
घर और दिशा भिन्न पर श्रोत है एक ही तन
भोगी और त्यागी में एक सीधा खड़ा एक करता शीर्षासन,
एक नारी के पीछे और एक उसके आगे रहा दौड़
जागरण के विना उसको सका न कोई छोड़ । ★

卐 जब से तुममें नहीं रहा तेरा मेरापन
तब मैंने तुम्हें सद्गुरु मानकर कर दिया समर्पण
तुमने बताया
दमन से दबी कामना, वेग से फूट कर बना लेती राह
और भोग से सदा अतृप्त रहती वासना की चाह
त्याग और भोग से परे विसर्जन मे रम जाये मन
राग और द्वेष की शृङ्खलाओं से छूट जाय तन
अनासक्ति भाव से जाग उठे कण कण
तभी प्रकट होगा मेरा जीवन धन। ★

卐 अहंकार एक घटना है, वस्तु नहीं
उसे खड़ा होने के लिये चाहिए सहारा कहीं
चाहे पाप भरे कर्म
चाहे पुण्य भरा धर्म
स्वर्ग या नरक
वासना मिली, स्थान बना लेगा वहीं।★

卐 आपको यह सब कुछ कहने का अधिकार है
जिसे आपने लिया है सत्य मान
और मुझे भी यह अधिकार है
कि उसका खंडन कर
मैं तोड़ दूँ आपके अंह की शान *

卐 अर्थ, सत्तावैभव, ने मूर्च्छित कर दिया मेरा चेतन
आंखों पर आवरण छा गया, बुझ गया मन
मेरे मुखोटों को देख कर ही जगत ने दिया मुझे सम्मान
पर आश्चर्य तो यह है कि उन मुखोंटो को
मैंने अपना समझकर
मैं स्वयं को भी कभी सका न जान। *

卐 सोने से भरी तिजोरियां महलों में भरा धन
आज तक बना नहीं सका किसी का सुखी जीवन
सोने में भय है अतः धनपतियों को नींद आती नहीं
खाने पीने का आनन्द मिले कहाँ से
भूख व प्यासी सताती नहीं
स्वस्थ जीवन दूर ही रहता उनसे
तन की व्याधियाँ दूर जाती नहीं
चैतन्य बुझ जाता छा जाती जड़ता तमाम
क्योंकि उनके पास जो है उसका सौना है नाम ✶

卐 भरा पेट गा नहीं सकता प्रभो के मिलन
की तड़क के गीत
भरा हाथ पा नहीं सकता वंदन अर्चन कर
प्रभो की मीत
अंहकार भरा तन बना नहीं सकता
जगत में अपना कहने को मीत
वासना भरा मन मना नहीं सकता
अपने, अपने द्वारा अपनी ही जीत। ✶

卐 जिस पथ विचरण किया जा सके
वहीं अविकारी या सनातन पथ नहीं
और न उसी पर चलने से कोई बनता महान
क्योंकि अनन्त आकाश में राजहंस
बिना पथ के ही भर लेते है, ऊँची उड़ान। ✶

卐 यह आवश्यक नहीं कि हम जिनका स्मरण करे प्रतिफल
वे ही काल जयी पुरुष हो तमाम
क्योंकि अधिक सत्य तो यह है कि
धरती और स्वर्ग का सृष्टा तो सदा ही रहा अनाम
और पदार्थ को जन्म देने वालों का रह
गया केवल नाम। ✶

卐 हमारा अपना सत् तत्व तो
सदा हो रहता है मौन
और बाहर से प्राप्त ज्ञान बोल कर
बता रहा है मैं कौन
इसलिये जो मैं कहता हूँ
उसका बहुलांश है बेकार
पर कहता रहता इसीलिये
कि अन कहा प्रकट हो जाय मन के उस पर ★

卐 चित्ता पर लेटा हुआ था शवशांत, लगा इसके
चिंता का आ गया अन्त
संतान के शादी की चिंता गई उतर
चुकाना पड़ेगा नहीं आयकर बिक्री कर
खाने कमाने का उतर गया भार,
जीने के झंझट से हो गया पार
तभी मूक स्वर से शव बोला, एक चिंता अब भी
रही है सता
सारी चिंताएँ करता ही क्यों आज के दिन
का यदि होता मुझे पता। ★

卐 धरती की परतों के नीचे
अन्धेरे व गर्मी की क्षा मार
बीच स्वयं तो मिट गया
इसी तरह जो स्वयं को मिटा देता है
गहरा उतर कर तप में निखर कर
वहीं बन जाता सर्वस्व
पा प्रभुता का आकार ★

卐 गहरी निर्मल नदी में डुबकी लगाने के पूर्व
हर कोई उतार लेता अपना वसन
और परमात्मा में लीन होने से पूर्व
अंहकार रहित करना पड़ता हैं तन और मन। ★

卐 त्रिकोण के तीसरे कौने पर खड़े हो मैंने
अपना जीवन देखा
जो कुछ मिला उसे किया स्वीकार, जागृत
द्रष्टा बन हुआ द्वंद से पार
मेरा व्यक्तित्व बन गया उड़ते हँस की छाया
परछाई पड़ी मिट गई पर कोई पकड़ नहीं पाया
शून्य व्यक्तित्व में मैं मिट गया तो प्रभो ने
अपना आसन जमाया। ★

卐 शब्द वर्ण रूप रस के आकर्षण
का आजकल मन ही है जन्म स्थान
और उसी को बाहर फैलाकर
पराई खूंटियों में टाँग कर
उन्हीं को आकर्षण हम लेते हैं मान। ★

卐 मस्तिष्क पर अत्यधिक विचारों के बीच को
कसने पर टूटने लगे जीवन वीणा के तार
और हृदय के भाव निसार व रीते ही गये
तो तार ढीले वनकर हो गये वेकार
तारों को अव अधिक कसा तो साज जायगा विखर
और ढीला छोड़ दिया तो मंद पड़ जायगा स्वर
इसलिये खोये खोये से नर जीवन वीणा के तारों से वेखवर
अपना जीवन संगीत खोकर रो रहे हैं
और विषादों में अपना आनन्द खो रहे हैं। ★

卐 इन्द्रिय और चेतना के वीच है
जो संवंध वहाव, मूर्च्छा अनुराग
उसे क्षीण करने की साधना का नाम है 'रस परित्याग'
और जहां वस्तुओं का रस छूट गया
कि आत्मानन्द का श्रोतस्वतः फूट गया। ★

卐 जिसने कभी ने की सुरक्षा की चाह
और जो अपने प्रति रहा बेपरवाह
एकाकी होकर खोजली उसने अपनी राह
और शून्य बनकर पालिया जीवन अथाह
पर जिसने सुरक्षा हेतु लगाया पहरा
उसकी चेतना हो गई मौन, प्राण हो गया बहरा
जग कर अभय बन जो आगे न चला
मौत की छाया में वह प्रतिपल चला। ★

卐 सांसों के प्रवाह में निरन्तर टूटती लड़ी
जिनके बीच है न कोई कड़ी
न आये साँस तो आश्चर्य ही क्या है ?
मौत के झूले में पलता जीवन
चलकर टिक रहा है यह बात सचमुच है बड़ी। ★

卐 मनुष्य ने अभेध्य दुर्गों का किया निर्माण
भव्य भवन बनाए, सुन्दर आलीशान
निर्माता चले गये
पर सहस्रों वर्षों से भवन खड़े रह रहे हैं
और मनुष्य के नश्वरता की कहानी
सशक्त स्वरों में कह रहे हैं। ★

卐 हृदय के मरुस्थल में केवल एक हरियाली
जहाँ पर टिकी है मेरी श्रद्धा निराली
पहुँच नहीं सकता वहाँ विचारों का काफिला
रोंद नहीं सकता, वहाँ भक्ति का बाग खिला
श्रद्धा और भक्ति के आगे तर्क हैं मौन
आनन्द अमृत उसको बता सका कौन ? ★

卐 इच्छाओं को जो निरतर जन्म देती है
और जो फल की आँकाक्षा में रस लेता है
वहीं चलता रहता है समय का प्रवाह
पर जहाँ अँह शून्य होकर
हर वस्तु का जागृत वन स्वीकार किया जाता है
वहाँ प्रकट हो जाता केवल आनन्द अथाह ★

卐 नर से नारायण बने कि उनका ज्ञान जग गया
कुछ मिला नहीं पर जो अपना था उसका पता लगाया
किसो ने पूछा भगवान आपने क्या किया
तो वताया कि जव तक करता रहा तब तक
हृदय में अशान्ती रही
और शून्य बन अन्दर झांका स्वयं में
तो युग युग का गहन अन्धकार भग गया । ★

卐 मैं तो नहीं मानता कि मेरी मंजिल है दूर
क्योंकि उस तक पहुँचने की मेरी तड़फ भरपूर
और संकल्प कर लिया तो उसको आना पड़ेगा
पास स्वयं आकर गोद में बिठाना पड़ेगा
साहस किया तो दूरी गई सब सिमट
एक ही छलांग भरी, लिया काम सब निपट। ★

卐 गुरु और शिक्षक में बड़ा भारी अन्तर
शिक्षक का सम्बन्ध है बौद्धिक व्यावसायिक व अपूर्ण
और गुरु का है आत्मगत औत्यतिक पूर्ण
शिक्षक परम्परा को सेतु बनाकर स्मृति से देता ज्ञान
गुरु अनुभूति में हृदय का प्रेम उड़ेलकर बनता प्रज्ञावान। ★

卐 दार्शनिक सोचता ही रहता है
पर यात्रा पर कभी निकला नहीं
धार्मिक निकलने के लिये वो सोचकर
यात्रा पर बढ़ चला सही
उसका विवेक पुल बन गया मन बन गया द्वार
और पा लिया उसने अनुपम चेतना का सार। ★

प्रभो मैंने बहुत त्याग किया, भारी किया तप
आठों पहर रट लगाई रामनाम जप
फिर भी मैंने तुमको अब तक पाया ही नहीं
तभी प्रभो मुस्कराकर बोल उठे,
कैसे आऊँ कहाँ आऊँ प्रभुता को तुमने रमाया ही नहीं
भरा हुआ अहं से पूरा मैं को तुमने मिटाया कहीं नहीं। ★

卐 जीर्ण शीर्ण यह वस्त्र त्याग, नित्य पहनता है नूतन तन
तन को त्याग आत्मा पाती है,
एक बार फिर नूतन जीवन
जीवन एक अनन्त प्रवाह है एक कर आगे बढ़ता जाता
अनन्त यात्रा के चरण, रुके कब मंजिल पर
वह चढ़ता जाता। ★

卐 किसी ने मुझसे पूछा
मोक्ष क्या है, कैसे उतरे जीवन के पार
तो मैंने एक उड़ती चिड़िया मुट्ठी में ली पकड़
और उसको बताई स्वतन्त्र होने की छटपटाहट और तड़क
पकड़ छूटते ही शीघ्र उड़ी अनन्त आकाश
खुली हवा मिलती जहाँ स्वच्छ है प्रकाश
ऐसी छटपटाहट और तड़फ हो जाये
हमारी आत्मा अनन्त आकाश में खो जाये
स्वाधीन हुये कि खुला मोक्ष का द्वार। ★

卐 इकलौते बीमार पुत्र की अहर्निश सेवा करते
पिता ने नींद की झपकी में देखा स्वप्न
बाहर युवा पुत्रों से घिरा हुआ जीवन
कि पुत्र मर गया मचा हाहाकार
आँख खुलते ही पिता का हुआ विचित्र व्यवहार
बारह पुत्रों को पाया और आँख खुलते ही गँवाया
उनसे घिरा था तो इसका ध्यान भी न आया
एक सोते का सपना, एक जागते का सपना
किसका करूँ शोक, मैं किसे कहूँ अपना। ★

卐 गरीब अशिक्षित मल्लाह की नाव में
बैठ, गया एक पंडित विद्वान
नाविक को भाषा, गणित, धर्म का था न किंचित ज्ञान
पंडित ने उसके जीवन का बहुलांश व्यर्थ लिया मान
तभी तूफान में नाव डगमगा गई, टूट गई पतवार
तैरना जाने बिना पंडित, डूब गया मँझधार
सब कुछ सीख कर भी जिसे तैरना आता नहीं
भव सागर का पार वह कभी भी पाता नहीं।

卐 आँख पर पलकें, दाँतों पर अधर
केश खड़े सर पर चाम चढ़ा तन पर
मन को घेरते विचार, हृदय को विंधते भावों के शर
जाति, भाषा रंग वर्ण, धर्म सम्प्रदाय के रहे आवरण
आवरणों, में घिरे, हम नये आवरण गढ़ रहे हैं
पर जिसने घेरों को तोड़ा, वे ऊँचे बढ़ रहे हैं। ★

卐 बिना लक्ष्य के यात्री को गन्तव्य का पता बताया
लड़खड़ाते पैरों को बल देकर उत्साह बढ़ाया
हल्का कर दिया सरका भार
कि यात्री एक ही चरण में पा गया पार
सही दिशा, शक्ति हो वेग और उत्साह
हल्के बन जाय तो पूरी हो सकती प्रभु बनने की चाह ।★